

नटखट गुलशन
जगजीतसिंह राणा
जगजीत भैया!...बाहर आपके परममित्र 'भूषण गाँधी' जी आए हैं...
गुलशन भैया! मुझे सब पता है! बाहर कोई भी नहीं आया है ...आज फर्स्ट अप्रैल है ...इसलिए तुम मुझे अप्रैल फूल बनाने का चक्कर चला रहे हो
...नहीं भैया नहीं ...मैं सच कह रहा हूँ ...मैं उन्हें अभी अन्दर ही बुला लाता हूँ
APRIL 1
...और गुलशन, भैया के परममित्र को अन्दर बुला लाता है।
क्यों भैया! ...मैं आपसे सच कह रहा था न?
...अरे ...आओ भूषण! ...मैं तो समझा था कि गुलशन झूठ बोल कर मुझे अप्रैल फूल बना रहा है ...हें ...हें ...हें
भूषण के जाने के थोड़ी देर बाद, गुलशन फिर जगजीत भैया के पास आता है।
भैया! ...भैया!! ...आपके दो और मित्र 'सुनील धवन' और 'प्रदीप सांम' जी आए हैं ...बाहर खड़े हुए हैं...
अच्छा ...! देखूँ तो...
...और जब जगजीत भैया बाहर आकर देखते हैं ...तो......
अप्रैल फूल बनाया!
J.S.RANA
DELHI-35.

दीवाना

अंक : ७ वर्ष : १७ १ अप्रैल १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

चिल्ली को सब रूप में
देखा करो हर रोज
नहीं करे कुछ काम-धाम
खाली बैठा मारे मौज।
खाली बैठा मारे मौज
मौज में वो मस्ती है
महंगाई कितनी भी हो
लेकिन इनको सब सस्ती है॥

आगामी अंक में

★★

किसान रैलियों के नारे

★★

मुझे शिकायत नहीं है

★★

इक आग का दरिया है

★★

मुफ्त पोस्टर—शेर

आपके पत्र

नयी साज सज्जा के साथ दीवाना अंक २ बिलकुल ठीक समय पर मिला। काका के कारतूस व गरीबचन्द की डाक बहुत पसन्द आई। मोटू पतलू पढ़ कर तो हँसी का फव्वारा छूट गया। बन्द करो बकवास सवाल यह है तथा दीवाने पत्र भी रोचक थे। मैं आशा करता हूँ क्रिकेट खिलाड़ियों के पोस्टर दीवाने की शोभा बढ़ायेंगे तथा आगामी अंक भी इस तरह समय पर मिलते रहेंगे।

सुरेश कुमार 'निक्की'—भटिंडा।

क्रिकेट खिलाड़ियों के पोस्टर दीवाना में शीघ्र ही दिये जायेंगे।

—सम्पादक

दीवाना का अंक १ प्राप्त हुआ। मुख्य पृष्ठ पर चिल्ली को देखते ही बहुत खुशी हुई। इसके सभी स्थायी स्तम्भ मोटू पतलू सिलबिल पिलपिल, काका के कारतूस एक से एक बढ़ कर अच्छे थे। धारावाहिक उपन्यास 'चमकती आँख तथा तीन जासूस' काफी रोचक चल रहा है। कृपया कपिल देव का पोस्टर निकालें। आशा है दीवाना पत्रिका भविष्य में भी इस प्रकार मनोरंजन करती रहेगी।

परमजीत सिंह सुलैच—करनाल।

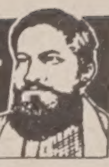
दीवाना नये वर्ष का अंक १ मिला। पंचतंत्र, मोटू पतलू, सिलबिल पिलपिल, बुरे फंसे इस चक्कर में, सवाल यह है तथा हिरण का पोस्टर बहुत पसन्द आये।

अमिताभ बच्चन का पोस्टर देने की कृपा करें।

मोहन कुमार—अलवर।

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के —



दिनेश हरीश सरदाना, कालका

प्र० :एक व्यक्ति है, उसे घमंडी कहते हैं, जबकि वह घमंड बिलकुल नहीं करता।

उ० :झूठ-मूठ भ्रमवश कभी पड़ जाता है नाम।
आँख न फोड़ी किसी की, 'अँखफुट्टा' बदनाम।।

गणेशदत्त मयंक, खुरजा (उ०प्र०)

प्र० :काकाजी, क्या आपकी मुस्कान काकी के सामने भी जारी रहती है?

उ० :सुंदरियों को देखकर मधुर-मधुर मुस्कायँ।
काकी जी के सामने, नकली दाँत दिखायँ।।

अशोक जौहर, 'नीलम', देहरादून

प्र० :जनता पार्टी की लुटिया डुबा कर आपकी कवि बिरादरी को क्या हासिल हुआ?

उ० :कवियों की निंदा करे, उसे न पूछे कोय।
जिसकी गद्दी छिन गई, उसकी भद्दी होय।।

नरेश कुमार गुलाठी, तिलक नगर, दिल्ली

प्र० :मैं फर्स्ट डिवीजन पास हुआ हूँ आपको क्या भेजूँ?

उ० :स्वीकारो प्रिय बधाई, आए हो तुम फर्स्ट।
काकी जी को भेज दो, 'टुन-टुन' की इस्कर्ट।।

रवींद्रनाथ पंजाबी, जालंधर सिटी

प्र० :दुनिया में सबसे महँगी वस्तु क्या है, काका?

उ० :लूट-फूट, कुर्सी झपट, सस्
मतदान।
सबसे महँगे आजकल, देश
ईमान।।

धर्मेश कुमार, गोयल, गांधी
हाथरस

प्र० :काकाजी, आजकल के युग में
अभिनेत्री?

उ० :अर्द्धनग्न के दृश्य जो, शूटिंग
देय।
किसी विदेशी युवक का, चुंबन
लेय।।

विनोद सुजान, विवेक वि
दिल्ली-३२

प्र० :काकी जी को व्यर्थ ही करते
बदनाम।
उसे त्याग कपड़े रँगो, भजो राम
नाम।।

उ० :कविता में आजाय जब काकी जी
नाम।
संपादक झट छाप दें, मिल जा
दाम।।

सुनील चकचक, सिविल ला
इलाहाबाद

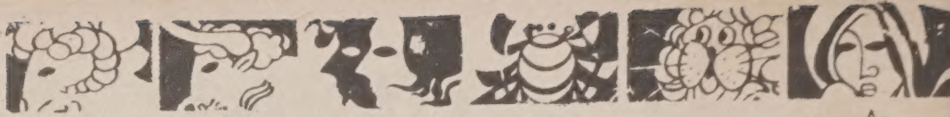
प्र० :गर्ल फ्रेंड अब हो गई है मुझसे नारा
कहती है, लैटर कभी मत लि
सरताज।।

उ० :जिस लड़की ने आपको मान लि
सरताज।
दूल्हा बन पकड़ो उसे, रख कर सर
ताज।।

काका के कारतूस

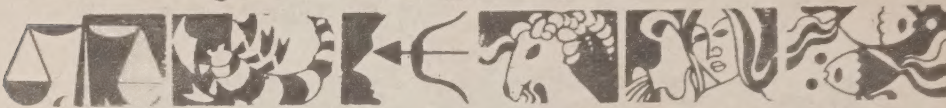
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


होंगे बच्चे स्वस्थ
फले फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555
अ हा...! मीठी-मीठी
MUGLI
JANAM
GHUTTI
555
No 555
SRIRAM AYURVED BHAWAN
E-88 NAVIN SHAHDARA
DELHI 110032
पुष्ट व सदा निरोगी
रखने के लिए
पाँच वर्ष की आयु तक
दैनिक प्रयोग कराइए
बच्चों को स्वस्थ बनाइए
अनेकों
माता-पिता
द्वारा
प्रशंसित.....
श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032



आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : व्यर्थ के वाद-विवाद से परेशानी, सज्जनों की राय से लाभ होगा, व्यय की अधिकता से परेशानी, फिर भी मेहनत सफल रहेगी, कारोबार आगे बढ़ेगा, आय में वृद्धि, यात्रा सफल, बल द्वारा सफलता पाएगें.

वृष : शुभकार्यों से मन दूर भागेगा, रोज़गार ठीक चलेगा, भाग्य साथ देगा, परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी और कोई विशेष काम बन जाएगा, लाभ सामान्य पर खर्च ज्यादा होगा, लाभ में कमी होने से कुछ परेशानी.

मिथुन : लाभ तो होगा किन्तु खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, यात्रा में सुख परन्तु समय ठीक नहीं, घर में परेशानी, लाभ अच्छा पर देर से मिलेगा, विशेष दौड़धूप से कुछ काम बन सकेंगे.

कर्क : सोशल कामों में व्यस्तता एवं व्यय भी होगा, कोई बिगड़ा काम बनने की आशा है, यात्रा सफल, परिश्रम काफी रहेगा, काम-धन्धा ठीक चलेगा, आय यथार्थ, घरेलू खर्चा बढ़ेगा.

सिंह : लाभ के अवसर मिलेंगे, परेशानी बिना कारण ही रहेगी, रोज़गार सुधरेगा, शुभफल अधिक होंगे, परन्तु परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, आय-व्यय समान, यात्रा की आशा है.

कन्या : अत्य अधिक कार्यभार से थकान का अनुभव होगा, यात्रा न करें, हालात ठीक होंगे, कारोबार में दृढ़ता, लाभ तो होगा पर खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, बुरे लोगों से बचें, कामों में सफलता मिलने से खुशी.

तुला : स्थायी कामधन्धों से लाभ, शुभफल प्राप्त होंगे, घरेलू बातों से मन परेशान, लाभ के चांस आएंगें, रोज़गार की स्थिति पहले जैसी ही, खर्च ज्यादा, यात्रा में कष्ट या परेशानी, कामधन्धों से अच्छा लाभ.

बृश्चिक : धन व्यय होगा, लाभ पहले से अच्छा, कारोबार ठीक चलेगा, मिलेजुले फल रहेंगे, यात्रा सावधानी से करें, लाभ आशा से कम होने पर परेशानी, विशेष काम बन जाएगा, शत्रु मुंह की खाएंगे.

धनु : बड़े लोगों से मेल मिलाप, मनोरंजन पर खर्च होगा, शुभफलों का संचार परन्तु परिश्रम भी काफी होगा, अफसरों से मेल जोल, कारोबार सामान्य चलेगा, लाभ यथार्थ होगा.

मकर : लाभ यथार्थ पर खर्च ज्यादा होगा, यात्रा छोड़ दें तो अच्छा है, कारोबार में दृढ़ता, लाभ भी बढ़ेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय, मशीनरी आदि से परेशानी, मित्र सहयोग देंगे.

कुम्भ : बड़े लोगों से मेल-मिलाप, घरेलू चिन्ता या व्यय बढ़ेगा, लाभ तो होगा किन्तु खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, यात्रा पर न जाएं, कोई काम अधूरा रह जाएगा, मित्र सहयोग देंगे, कारोबार संभलेगा.

मीन : नौकरी/व्यवसाय में नरमी, यात्रा सफल रहेगी, ऋण सम्बन्धी कामों में परेशानी, अन्य हालात ठीक चलेंगे, कारोबार सुधरेगा, यात्रा की आशा है, आय में वृद्धि, आत्मबल दृढ़ रहेगा, दिन ठीक नहीं.

उधारी बुरी बला

—आजाद रामपुरी

वे बेतहाशा भागे-भागे आए और मुझे यों मानकर कि मैं बैठकर भी (कुर्सी पर) कुम्भकर्णी नींद में खर्राटे ले रहा हूं, झकझोरते हुए बोले—"मित्र बड़ा गज़ब हो गया ?

"क्यों क्या हो गया—क्या कोई पहाड़ टूट गया ?" मैंने भी आव-देखा-न-ताव बस मुंह-फट्ट किसी नेता की भांति यह वाक्य डाल दिया, मानों तो मुझे भी पहले से ही शब्दों की कब्जियत हो रही हो। मैंने जिस समय यह शब्द उगल कर उनकी बात के जवाब में दे मारा उस समय उनकी हालत देखते ही बनती थी। वे किसी बगुले की भांति ध्यान लगा एकटक मुझे यों देखने लगे कि मानों वे कोई भोजन भट्ट भीमसेन हों और मैं उनका प्रिय भोजन ! वे सम्हलते-सम्हलते बोले—"मित्र पहाड़ तो नहीं टूटा किन्तु मेरे धीरज का बांध टूट रहा है ?"

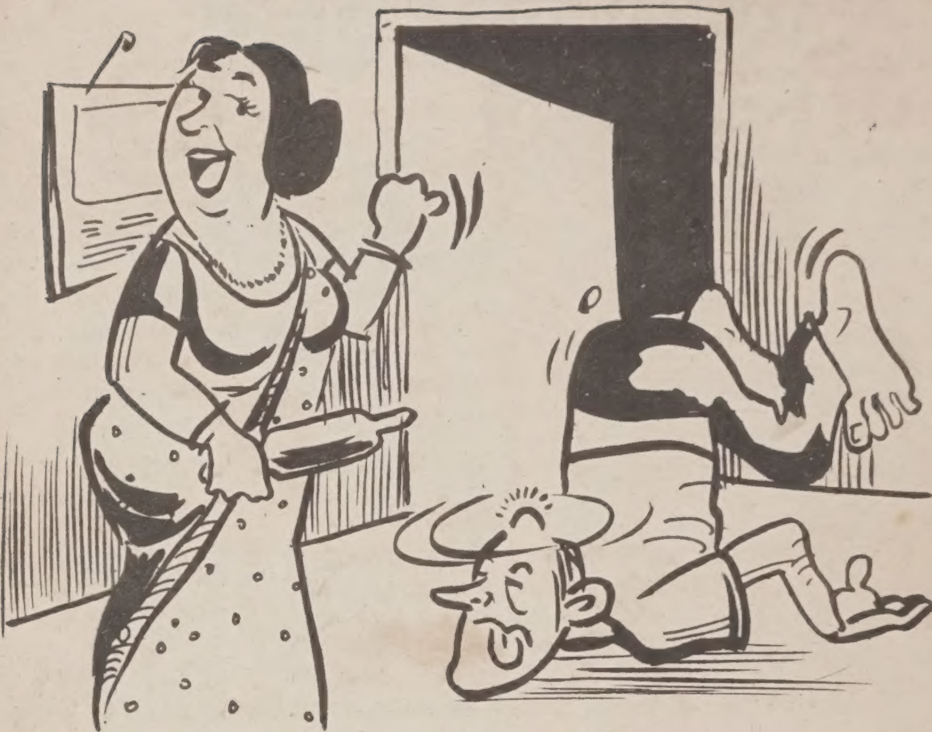
"क्यों तुम्हारा धैर्य-क्या इतना कच्चे मसाले का बना है कि यह बांध मुझे देखते ही टूटने लगता है—वरना ध्यान करके देखेगो तो पाओगे कि आजकल तो बड़े-बड़े नेताओं के धैर्य के बांध उस समय तक नहीं टूटते जब तक कि उनके पद कच्चे धागे की भांति नहीं टूट जाते, फिर उनकी समझ का कमाल देखो कि वे इसे भी अपना भाग्य फूटना न मानकर बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना मानते हैं। फिर तुम ने क्या कच्चे गोले खाए हैं। पक्के अखाड़े के सच्चे खिलाड़ी हो ! डटे रहो धार पर ! कभी न कभी ईश्वर सुनेगा ही—

"कबहूं न दीनदयाल के भनक परेगी कान !"

प्यारे जान, हार मत मानो और धैर्य के बांध को न टूटने दो। हां, बाध टूटने लगे तो धैर्य को तो कभी भी मत टूटने दो ! बांधों का क्या है—इस देश में टूटते ही रहते हैं——वर्षा आई—मूसलाधार जल बरसा, बाढ़ आई और बांध टूटे ! कई टूटे है, टूटते रहे है और टूटते रहेंगे. एक साथ दस-दस, सौ-सौ—पर अपने 'बांध निर्माण विभाग को देखो हमेशा फलता-फूलता ही मिलेगा-बांध के टूटने का सीधा संबंध इस विभाग की खुशहाली से है। हाँ धैर्य के टूटते ही स्वयं को खतरे का निशान दिखने लगता है—तुम्हारा धैर्य नहीं टूटना चाहिए वरना धैर्य के टूटते ही तुम्हारा यह ढाई क्विंटल का शरीर भी धराशाही हो जायेगा। समझे !"

"वह तो मैं समझे ही बैठा था—कई बार समझ चुका हूं।" वे मेरे धाराप्रवाह भाषण को सुनकर इतने ऊब गये थे कि वे राहत पाने के लिए जम्हाई लेकर अंगड़ाइयों की हिलोरें मार रहे थे। वे मेरी चाल को नाकाम करने की दृष्टि से अपनी बात जारी रखते हुए कहने लगे:

"प्रश्न न तो बांध के टूटने का है और न धैर्य के छूटने का ! सबसे बड़ा सवाल यह है कि आप सब कुछ जानते हुए भी नासमझी का जो नाटक रच रहे है वह सफल नहीं हो सकेगा। आख़िर दोस्ती की भी तो कोई सीमा होती है। दस माह हो गए पचास रुपयों को उधार लिये थे कल ही देने के नाम पर और सरकते चले गये महीने पर महीने ! कोई शर्मदार होता तो चुल्लुभर पानी में डूब मरता लेकिन तुम ठहरे पक्के बेशर्म ! सौबार चक्कर लगाए तुम्हारे घर के किन्तु एक पाई तक देने का नाम नहीं लेते हो—यह कोई भलमनशाहत है तुम्हारी ?" वे क्रोधाग्नि से भभक कर गुस्से की जलती हुई भट्टी बने जा रहे थे उनकी बातों में लाल-लाल तपते हुए अंगार बरस रहे थे मेरे द्वारा जल के छींटे मारने के सारे प्रयास असफल हो-होकर लुढ़कते हुए नज़र आ रहे थे और मुझे किसी सम्भावित विस्फोट के



आसार नज़र आ रहे थे। तभी मैंने अपनी पाकट से दो का नोट यह प्रदर्शन करते हुए निकाला कि मैं उनके कुल पचास रुपये अभी हाल ही उनके सामने पटके देता हूं और बन्द मुट्ठी से कसे अपने हाथ को उनकी ओर बढ़ाया। लेकिन वे भी पक्के घाघ थे। मेरे दाव को पूरी तरह समझ गए थे। उन्होंने किसी काले कौआ की भांति इधर-उधर नज़र दौड़ाई और बोले—''पूरे सौ मांग रही है, वह कहती है प्रेमिका बनाई हूं कोई चलती-फिरती थोड़े ही हूं जो चार-छै रुपये में हाजिर मिलूं।''

''क्या कहा—यह चक्कर है—अब आया मेरी समझ में ? '' मेरी पत्नी अन्दर से चीखते हुए चिल्लाई ! मै पत्नी की चीख सुनते सी सुन्न रह गया ! शरीर की सारी गर्मी पिघलने लगी। उनको तो मैंने दो के साथ [illegible]स रुपये और देकर चलता किया [illegible]धर हाथ में बेलन लिए पत्नी को अपनी ओर हनूमान की भांति आता देख कर मैं साष्टांग प्रणाम कर उसके चरणों में लोट गया। घोर कलियुग में सतयुगी वातावरण बन गया। क्योंकि कहा भी गया है—

''यत्र नार्यन्तु न पूज्यन्ते तत्र देवता न रमन्ते।''

जिस घर में नारी की पूजा नहीं होती है वहां देवताओं का भी वास नहीं होता है।

नारी पूजा का यह सारा श्रेय मेरे उस दोस्त को है जिसके पचास रुपए मैंने कभी उधार लेकर उन्हें वापिस करने का नाम तक नहीं ले रहा था। पर वाह रे दोस्त, तू भी अब्बाल दर्जे का पण्डितज्ञानी निकला कि एन वक्त पर गाण्डीव धारी अर्जुन की भांति वह शर संधान किया कि मै चारों खाने चित्त हो गया।''

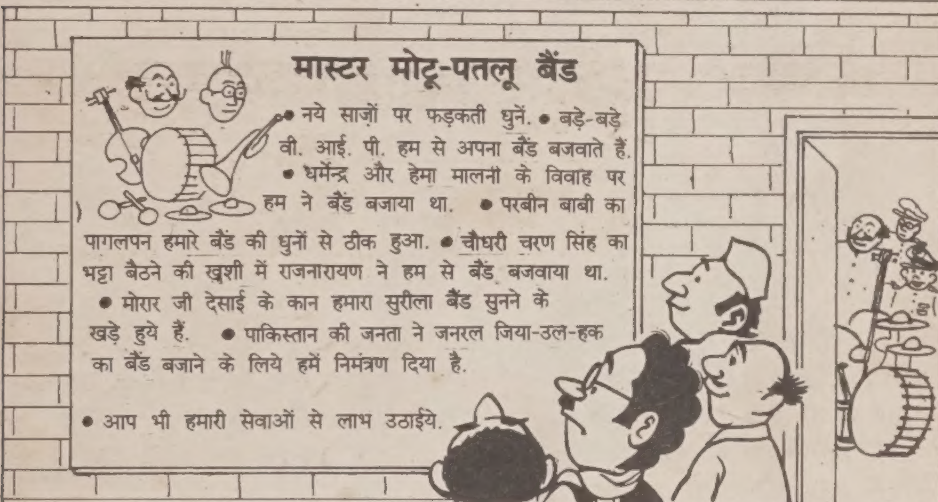
मैंने पत्नी के चरणों में लोटते समय ही पीछे की ओर देखा तो मेरे वे मित्र अपने नये पैंतरे पर मन्द-मन्द मुस्कराते हुए विजयी नेता की भांति घर को लौट रहे थे। ●

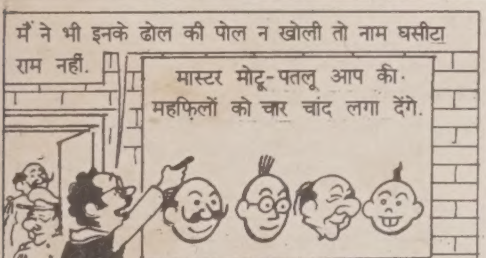
मास्टर मोटू पतलू बैंड

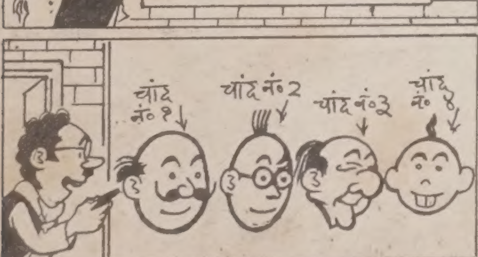
पिछले दिनों मोटू-पतलू ने समाचार पत्र में एक बैंडकम्पनी का विज्ञापन देखा, तो उन्हें अपनी इस मूर्खता पर बेहद गुस्सा आया कि नाम और रुपया कमाने के लिये बेकार की दौड़ धूप करने की बजाये उन्हें अब तक एक बैंड कम्पनी खोलने का आइडिया क्यों नहीं आया है?

इस धंधे में कोई रिस्क नहीं, लम्बी-चौड़ी रकम नहीं लगती और बैंड कम्पनी चलाने के लिये गुर की बात बस इतनी सी है कि दो चार फड़कते हुये फिल्मी गीतों की धुनें सीख लो और बरातों में धूम मचा दो. फिर आजकल विज्ञापन बाज़ी का जमाना है. समाचारपत्रों में जितने बड़े-बड़े विज्ञापन दोगे बैंड कम्पनी का नाम उतना ही चमकेगा.

बस आईडिया आने की देर थी. मोटू-पतलू ने कबाड़ी बाज़ार से बैंडबाजे का पुराना सामान खरीदा और अपनी बैंड कम्पनी खोल ली. बैंड बजाने वालों की नफ़री पूरी करने के लिये दूसरे बैंड वालों के आदमी तोड़ लिये हैं.










खेलो रंग हमारे संग
आज दिन रंग रंगीला आया.
क्या अनापशनाप बजा रहे हो.
हम म्यूज़िक डायरैक्टर नौशाद का कमाल दिखा रहे हैं और तुम इसे अनापशानाप कह रहे हो.
आज का जो दिन आया है वह रंगरंगीला नहीं है मेरे लिये.
तो फिर दूसरा नमूना सुनो.
बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है, मेरा महबूब आया है.
महबूब आया नहीं है. महबूब जा रहा है. मेरे दादा का देहांत हो गया है. तुम्हारा मुर्दा उठे तो उसके साथ यह बैंड बजाना, दादा जी की अर्थी के साथ मैं कोई और बैंड ले जाऊंगा.
गलती हो गई. हमें ग्राहक को किसी ग़म के गाने का नमूना सुनाना चाहिये था.
मैं तुम्हारा बैंड बुक करना चाहता हूं पर ज़रा अपनी धुनों का नमूना तो पेश करो.
अभी लीजिये हजूर.
पहले वाली गलती अब नहीं करेंगे. शबाब फ़िल्म के दर्द भरे गाने की धुन बजाओ.



वन . . . टू . . . थ्री.
लुट गये हम जीते जी मालिक तेरे संसार में. चल दिया हम को खिवईया छोड़ कर मझंधार में.
तुम्हारे मुंह में गोबर. यह क्या बजा रहे हो तुम ?
कहिये सेठ जी. पसन्द आई यह धुन ? मरने वाले की आत्मा को बड़ी शांति मिलेगी इससे.
सत्यानाश हो तुम्हारा. मैं अपने बेटे की शादी के लिये बैंड बुक करवाने आया हूं. और मातमी धुन बजा रहे हो.
यह ग्राहक भी चला गया.
अकल के पीछे लट्ठ लेकर दौड़ रहे हो. कैसी धुन चाहिये, यह तुम्हें ग्राहक से पूछ लेना चाहिये था.
चलो तुम बता दो. तुम्हारे लिये कैसी धुन बजायें ? मातमी ?
अपना मुर्दा उठाओ. और मातमी धुन तुम अपने लिये बजाओ. मैं तो अपनी शादी का बैंड बजवाऊंगा.
लो शादी का बैंड बजाये देते हैं. वन . . . टू . . . थ्री.
आज मेरे चोर की शादी है. आज मेरे चोर की शादी है. घर घर धक्के खाये, उसी मनमोर की शादी है.
शायद पसंद नहीं आया. दूसरी धुन बजाओ.
मेरा यार बना है दुल्हा. और फूल खिले हैं मन के. मेरी भी शादी हो जाये, दुआ करो यह मिल के.
मेरा यार बना है चूल्हा, उस पे तवे चढ़े हिल मिल के, अरे मेरी भी रोटी सिक जाये. दुआ करो यह मिल के.
अपने घर चल घसीटा राम क्यों इन कान फाड़ने वालों के मुंह लगता है.
घर से चले थे हम तो खुशी की तलाश में, ग़म राह में खड़े थे वही साथ हो लिये, कुछ दिल से दिल की बात कही और रो लिये -यूं हसरतों के दाग.



घसीटा राम अपने घर पहुंचा तो बैंड की कान फाड़ आवाज़ वहां तक उसका पीछा कर रही थी.
मेरे मन की गंगा, और तेरे मन की जमना का, बोल राधा बोल संगम होगा के नहीं.
होगा, जरूर होगा. मैं तुम्हें धक्का दूंगा गंगा जमना में.
घसीटा राम यह कब बर्दाश्त कर सकता था. उसके पड़ौस में दिन-रात बैंड बजता रहा. एक दिन उसने शहर भर के गधे जमा किये और मोटू-पतलू के घर में घुसा दिये.
ढैंचू. ढेंचू . . .ढेंचू . . .ढेंचू.
ऐसा लगता है, यहां हम शान्ति से अपना बैंड नहीं बजा सकते.
शांति से बैंड बजाने के लिये कोई शांति की जगह ढूंढ़ो
कौन सी जगह ढूंढ़ें ? जिसे अपने घर में शांति नहीं उसे और कहाँ मिलेगी ?
दूसरे दिन घसीटा राम ने मुहल्ले भर के कुत्ते और बिल्लियां जमा कीं और मोटू-पतलू के घर में धकेल दीं.
अरे क्या मुसीबत है ? यहां तो आराम का एक सांस लेना कठिन हो रहा है.
बैंड बजाने के लिये शहर के बीचोंबीच शांति कहां मिलेगी तुम्हें. इसके लिये किसी सुनसान जगह पर चले जाओ.
कहां चले जायें.
शांति कुंज.
शांति कुंज ?
हां शांति कुंज. यहां से कोई पांच मील दूर. एक छोटी सी बगीची है. वहां शांति ही शांति है. वहां कोई तुम्हारे बैंड बजाने में बाधा नहीं डालेगा. यह पता है उस जगह का.

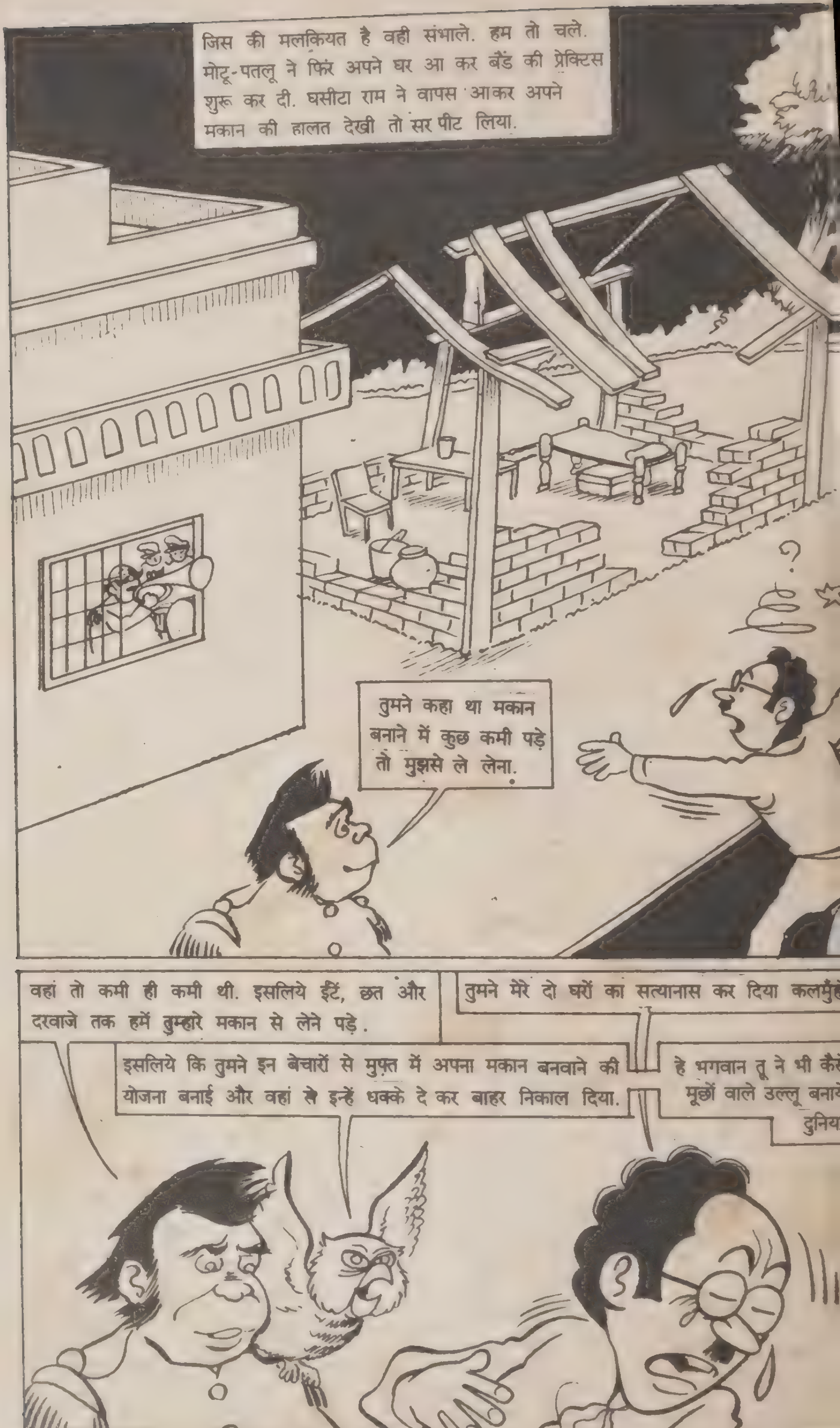


ठीक है. ठीक है. रेडे पर लादो अपना सामान और चलो शांति कुज, वहां अपने बैंड की प्रेक्टिस करेंगे.
आज पहली बार घसीटा राम ने हमारे भले की बात सोची है. भगवान भला करे उस का.
शांति कुज पहुंच कर पता लगा कि भगवान ने घसीटा राम का कितना भला किया था.
माफ़ करना हम जल्दी-जल्दी में तुम्हें अपने सामान के नीचे दबा गये.
यह कैसा शांति कुंज है? यहां कोई घर या कमरा तो है नहीं बस मलबा और लकड़ी के टूटे-फूटे फट्टे पड़े हैं.
तो क्या हुआ, लकड़ी के फट्टों से घर बना लो.
घर बनाने के लिये बहुत सामान चाहिये केवल इन फट्टों से क्या होगा.
कुछ कमी पड़े तो मुझ से ले लेना. मकान बनाने का सामान इधर-उधर से मांग लेना. तुम शुरू तो करो.



ठीक कह रहा है. जब घसीटा राम सहायता को तैयार है, तो कमी किस बात की. मकान बनाना मुझे आता है. मैं सब को सिखा दूंगा.
मैं एक काम से बम्बई जा रहा हूं. अच्छा अब एक सप्ताह बाद मुलाकात होगी.
घसीटा राम के जाने के बाद मोटू-पतलू एंड पार्टी ने हथोड़ी और आरी संभाली और अपना मकान बनाना शुरू कर दिया.
घसीटा राम ने कहा था, कुछ कमी पड़े तो मुझ से ले लेना. मैं बहुत सा सामान उसके घर से ले आया हूं.
घसीटा राम के घर की छत भी उखाड़ लाओ. और दरवाज़े और खिड़कियां भी. जीवन में पहली बार उस भले आदमी ने हमारी भलाई की बात सोची है.
घसीटा राम एक सप्ताह बाद लौट कर आया तो शांति कुंज में नया मकान बन कर तैयार था.
ठहरो. इस में इतना खुश होने की कोई बात नहीं है. यह देखो कागज़ात, यह शांति कुज मेरी मलकीयत है. आखिर दुनिया में कानून भी कोई चीज है.
मैंने पांच साल पहले इसे खरीदा था.
शांति कुंज की जमीन तुम्हारी है, तो मतलब है यह मकान तुम्हारा हुआ.
जी हां. यह मकान मेरा औ
मेरे बाप दादा का.


तुम अपना बैंड संभालो और यहां से चलते-फिरते नज़र आओ.
चलो कोई बात नहीं. मकान इसका है तो इसका सही. इसके ग्रह प्रवेश की खुशी में इसका बैंड तो बजा दो.
बेड़ा गर्क हो तुम्हारा. दफ़ा हो जाओ यहां से.
मकान इतना मज़बूत नहीं बना था.
धड़ाम
घसीटा राम ने गुस्से में जैसे ही दरवाजा दे कर मारा वैसे ही ···
मकान की दीवारें और छतें हिल गईं.
फिर एक तेज़ धमाका हुआ···
और पूरा मकान उसके ऊपर आ पड़ा.
अरे मैं मर गया. अरे मेरे मुर्दे को इसके नीचे से निकालो.



आगामी अंक में देखिये, इन जोकरों के नये कारनामें.

चमकती आँख और तीन जासूस



ले. प्रेत नाथ
भाग-११

सोईघर की खिड़की के बाहर उसे समय ता दिखाई दे रहा था, ऐसा प्रतीत हो रहा जैसे वह किसी घड़ी को देख रहा हो। ड़ी की पश्चिमी ओर की पतली ऊँची ड़ी की छाया बाग के आर-पार पड़ रही और सूरज के नीचे जाने के साथ-साथ छाया भी लम्बी और लम्बी होती जा रही ।

वह अपनी रस्सियों को आजमाने के लिये और हिला। रस्सियाँ मज़बूत थीं परन्तु ी फिर चरमरा उठी।

उसी क्षण राजू के दिमाग में एक विचार ध गया, एक बार वह एक पुरानी मराती कुर्सी पर बैठा था और कुर्सी उसके न से टूट गई थी, यदि वह इस कुर्सी को तोड़ने में सफल हो जाये तो . . .

और ये विचार आते ही उसने अपने र को जोर-जोर से आगे पीछे हिलाना रम्भ कर दिया। कुर्सी की कमर हिली, ई चरमराई, परन्तु उन्होंने टूट कर गिरने का न नहीं लिया। उसने अब जान कर साइड गिरने का प्रयास किया, और वह जोर के ड़ाके के साथ जमीन पर गिर गया। कुर्सी एक पैर अलग हो गया, वह पैर जिससे ू का दायाँ पैर बंधा था। उसने जोर-जोर लात चलाई तो कुर्सी की टांग रस्सी से कल कर अलग जा पड़ी, और रस्सी राजू पैर पर से ही लटकने लगी। उसकी टाँग ल गई थी।

अब वह इस खुले पैर की सहायता से ा और फिर वह कुर्सी की पीठ के बल ती पर जोर से गिरा, वह धरती पर लुढ़का और अपना सारा भार कुर्सी पर डाल दिया। उसने एक और झटका दिया और कुर्सी की पूरी बांह अलग हो गई। राजू की बाईं बाँह खुल गई, फिर उसने दाँई बाँह को उसी ढंग से छुड़ाने का प्रयत्न शुरू किया। जब राजू अपने को खोलने के प्रयास में बार-बार धरती पर जोर-जोर से गिर रहा था, उसे महिन्दर की भयभीत आवाज़ सुनाई दी।

'राजू! क्या हो रहा है? तुम्हारी किसी से लड़ाई हो रही है क्या'?

'मैं गुस्से से भरी कुर्सी से लड़ रहा हूँ, और मेरे ख्याल से जीत रहा हूँ। मुझे बस दो चार मिनट और दो।'

उसने पूरी शक्ति से हाथ, पैर, लात चलाई, और कुर्सी का हर भाग अलग अलग हो गया। हाथ, पैर तथा कमर परन्तु अभी भी कुछ हिस्से राजू के शरीर से बंधे थे पर ढ़ीले थे। अब वह सरक कर खिड़की पर से अपना चाकू उठा कर उसे खोल सकता था। वह अपनी दांयीं बाँह को इतना हिला सकता था कि चाकू के फल पर रगड़ कर रस्सी काट ले। एक और मिनट में वह खड़ा हो गया और अपने पर से सारी रस्सियों और कुर्सी को अलग कर दिया।

विजय की भावना से उसने अपने दुखते हाथ पैर हिलाये। 'सब ठीक है 'दो'। वह चिल्लाया 'मैं अब आ रहा हूँ'।

रसोईघर से सीढ़ियाँ शराब के निचले कमरे को जाती थीं, राजू ने उसका लड़की के दरवाज़े का कुंडा खोल दिया। महिन्दर और गस दरवाजे पर अचानक आये प्रकाश से चुँधिया गये।

'भगवान! महिन्दर ने उत्सुक स्वर में

कहा, 'राजू तुम्हें देख कर जान में जान आई, तुमने अपने को कैसे छुड़ाया ?'

राजू ने गर्व महसूस करते हुए कहा 'ये केवल दिमाग लगाने की बात है, अब हम जल्दी से यहाँ से भाग चलें। 'जो' और उसके साथी अभी कुछ देर वापिस नहीं आ पायेंगे। किसी भी हालत में हमें कबाड़ीघर पहुँच जाना चाहिये। श्याम को ओक्टेवियन की प्रतिमा मिल गई थी।

''प्रतिमा मिली थी ? कमाल हो गया ?'' महिन्दर बोला।

'ये बहुत अच्छी खबर है' गस ने साथ दिया।

'परन्तु काली मूँछों वाले के गिरोह ने उसे फिर ले लिया है', राजू ने बताया। 'मैं तुम्हें सब विस्तार से घर के रास्ते में बताऊँगा।

वे भाग कर घर से निकले और अपनी साइकिलें ले कर तुरन्त अपने घर की ओर चल दिये। राजू ने उन्हें सब कुछ विस्तार पूर्वक बताया, जो भी उनके कमरे में बन्द होने के बीच हुआ था। उसने ये भी बताया श्याम ने ओक्टेवियन कैसे ढूंढ़ लिया था और फिर काली मूँछों वालों ने उसे किस प्रकार फिर ले लिया है।

'बहुत अफसोस है, प्रतिमा हाथ में आ कर निकल गई', महिन्दर ने रुँआसे स्वर में कहा, 'लगता है प्रतिमा ही बदकिस्मत है'।

उम्मीद है ये सब 'चमकती आँख' के कारण ही हो रहा है' गस ने गम्भीर हो कर सुझाव दिया।

यदि ये 'चमकती आँख' के कारण दुर्भाग्य है तो, इसका प्रभाव काली मूँछों वालों पर पड़ना चाहिये, न कि हम पर। परन्तु मैं सोच रहा हूँ कि जिसे ये लोग ह्यूगो पुकार रहे हैं वह तगड़ा व्यक्ति होना चाहिये। परन्तु यदि तीन बिन्दू ने अपनी तलवार का उस पर प्रयोग किया है तो, वह तगड़ा नहीं हो सकता।'

'ये सब एक पहेली है', महिन्दर सहमत हुआ, 'परन्तु मुझे ये चिन्ता है कि हमें अब ओक्टेवियन कैसे मिल पायेगा, मेरे ख्याल से तो तुम्हारी विरासत में मिली चीज़ गई'।

गम्भीरता पूर्वक वे तीनों मार्ग की भीड़ भाड़ से बचते चलते गये. उन्हें वापिस कबाड़ी घर पहुँचने में काफी समय लग गया। सूरज डूब रहा था और अचानक उन्हें याद आया उन्होंने खाना भी नहीं खाया है और उन्हें घर के गेट में घुसते-घुसते बहुत तेज़ भूख लगने लगी।

'श्याम, हँस, और कुणाल के अतिरिक्त वहाँ कोई दिखाई नहीं दे रहा था। कबाड़ी घर के दोनों तगड़े सहायक लकड़ियों को ठीक से कोने में लगा रहे थे। छोटी ट्रक दफ्तर के करीब खड़ी थी। श्याम बेचैनी से बाग का कुछ लोहे का फरनीचर पेन्ट कर रहा था जिस पर से अभी वह जंग छुड़ा कर चुका था।

'श्याम बिलकुल निराश दीख रहा है', महिन्दर ने उसकी ओर जाते हुए कहा 'उसे ओक्टेवियन के चले जाने का बहुत दुःख



है'।

'हम सबं को ही दुःख है', राजू ने उसे उत्तर दिया 'चलो कुछ हिम्मत की बातें करें. मुझे श्याम से बात करने देना'।

''हैलो''! वह बोला 'मैं सोच रहा था कि तुम कहाँ हो'?

'हम 'गस' के दादाजी के घर गये थे', राजू ने औरों के साथ अपनी साइकिल रैक पर खड़ी करते हुए बताया। 'परन्तु हमें 'चमकती आँख' नहीं मिली. यहाँ कुछ आग हुआ'?

'अच्छा—' श्याम ने हिचकते हुए बताना शुरू किया, क्योंकि उसे जो यहाँ हुआ था बताने में तनिक भी खुशी नहीं हो रही थी।

'मुझे कुछ न बताओ', राजू बोला, मुझे अनुमान लगाने का प्रयास करने दो। श्याम, मेरी आँखों में देखो, ठीक ऐसे ही, आँखें न झपकाओ? मुझे अपनी आँखों में देखने दो, तुम क्या बताना नहीं चाहते।'

गस और महिन्दर खुशी-खुशी राजू को देख रहे थे, और वह गम्भीर मुद्रा बनाये श्याम की आँखों में देख रहा था, फिर उसने अपने माथे पर ऐसे उंगली रक्खी मानो बहुत [illegible]

'अर हाँ! दिखाई देने लगा, सारी तस्वीर सामने आ रही है। एक फोन आया था, फोन एक भूत सम्पर्क वाले भूत का था, कि ओक्टेवियन का पता चल गया है। और फिर तुम छोटी ट्रक में हँस को साथ ले कर शहर की ओर गये', क्यूँ ठीक बता रहा हूँ न?'

'हाँ बिलकुल ऐसे ही हुआ था, श्याम विस्मित हो राजू की ओर देख कर बोला. डिब्बा ट्रक में ही से गायब हो गया, गिर तो सकता नहीं था, ट्रक का पीछे का दरवाजा बन्द था मुझे कुछ पता नहीं?

ठीक इसी समय हँस एक प्रतिमा को बगल में दबाये इन लोगों के पास आया। श्याम ये ट्रक में रक्खी प्रतिमा है, बोलो इसका क्या करना है, मुझे ट्रक को गैरिज में बन्द करना है?

इसे बैंच पर रख दो, ये फ्रॉसिस बेकन की प्रतिमा है, मैं इसे अपने साथ ले गया था कि ओक्टेवियन के बदले यदि उस महिला ने चाहा तो इसे दे दूँगा, परन्तु उसने अपने पैसे ही वापिस लिये।'

हँस ने प्रतिमा बैंच पर रक्खी और चला गया, उसका मुँह पीछे को था, महिन्दर को पता था कि मि० माथुर को हर चीज़ करीने से रक्खी अच्छी लगती है और वह [illegible]

शेष पृष्ठ [illegible]४ पर



सवाल यह है?


सवाल यह है ?
टीचर ने कहा था. चाहे धूप निकले, या धुंआधार बारिश हो. वह क्लाश में टैस्ट ज़रूर लेंगी. पता है इस में खुशी की क्या बात है ?
आज बर्फ़ पड़ रही है.
सवाल यह है ?
अपनी चीज़ें बांट कर खाना अच्छी आदत है. तुम बन्दर को आधी मूंगफलियां खिला रहे हो ना ?
जवाब हाजिर है
हां, मैं छिलके बन्दर को देता जा रहा हूं.
सवाल यह है ?
आदमी बहुत सी चीज़े बनाता है. तुमने एक आदमी को घोड़ा बनाते देखा इस मे क्या मतलब है तुम्हारा ?
जवाब हाजिर है
वह उसके पांव में कीलें ठोक कर उसे तैयार कर रहा था

लाजवाब है?


सवाल यह है?
बेटा पैदल चलें या कोई सवारी कर लें
जवाब हाजिर है
आपने कहा था जानवरों को कष्ट देना बुरी बात है.
बस आप मुझे गोद में लेलें
सवाल यह है?
बगुला एक पांव पर क्यों खड़ा होता है?
जवाब हाजिर है
क्यों कि उसे पता होता है कि उसने दूसरा पांव उठा लिया तो वह गिर जायेगा.
सवाल यह है?
पहाड़ी की ढलान पर टैक्सी के ब्रेक फेल हो गये हैं गाड़ी अब मेरी मर्जी से आगे नहीं जा रही है साहब
और मेरी मर्जी से भी नहीं जा रही है
अब क्या करूं साहब?
मैं बताऊं?
जवाब हाजिर है.
और कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम किराये का मीटर तो बन्द कर दो!

पृष्ठ २१ से आगे
घुमाने चला गया। 'राजू' श्याम ने पूछा, तुम्हें कैसे पता चला कि हमें ओक्टेवियन मिल गया है?''

इसी बीच महिन्दर की आवाज़ आई 'जल्दी इधर आओ, और आकर बताओ कि मैं ठीक देख रहा हूँ या गलत'?

वे तीनों तुरन्त महिन्दर के पास पहुँचे और उसकी उंगली जहाँ इशारा कर रही थी वहाँ देखा, प्रतिमा के नीचे लिखा था 'ओक्टेवियन'।

'ओक्टेवियन' गस खुशी से बोला 'काली मूँछों वालों को आखिर ओक्टेवियन नहीं मिला'।

हँस ने गलत प्रतिमा पैक कर दी' श्याम एक दम बोला, मैं तो इतना निराश हो गया था कि मैंने इसकी ओर देखा तक नहीं। ओक्टेवियन सारा समय हमारे पास ही था।

उन तीनों ने स्वचालित रूप से पीछे की ओर देखा, मानो काली मूँछों वाले या तीन बिन्दू के गिरोह उनके पीछे खड़े हों। परन्तु वहाँ कोई न था।

यहाँ तक कि राजू भी कुछ क्षणों के लिये इस नई बात से चकरा गया, परन्तु उसने शीघ्र ही अपने को सचेत कर लिया।

जल्दी चलो! वह बोला, हम ओक्टेवियन को वर्कशाप ले जा कर खोल लेते हैं, अब कोई ख़तरा मोल लेने की आवश्यकता नहीं है। 'चमकती आँख' निकाल कर हम ऐसे स्थान पर छुपा देंगे, जहाँ कोई भी उसे ढूंढ़ न पाये।'

महिन्दर सबसे तगड़ा था उसी ने प्रतिमा उठाई और वर्कशाप में ले गया। राजू ने हथौड़ी और छेनी निकाल ली।

'देखो वह बोला 'किसी ने इसमें छेद बनाया था और कुछ रख कर फिर उसमें प्लास्टर भर दिया है। निशान बहुत हल्का है, परन्तु साफ़ दिखाई दे रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि अब 'चमकती आँख' हमारे हाथ आ गई है'।

राजू ने छेनी प्रतिमा के सिर पर रख कर हथौड़ी मारी, दूसरी ही चोट में प्रतिमा के दो टुकड़े हो गये और एक छोटा सा लकड़ी का गोल डिब्बा जो उसमें दबा हुआ था बाहर लुढ़क गया। महिन्दर ने झपट कर उसे उठा लिया और राजू को दिया।

खोलो राजू, लो इसे खोलो। देखें तो वह मानक जो पचास वर्ष से इसमें छुपा है। अरे डरते क्यों हो, क्या 'चमकती आँख' के दुर्भाग्य की चिन्ता है?

'नहीं' राजू धीरे से बोला, 'परन्तु ये डिब्बा कुछ भारी सा नहीं है, फिर भी देखते हैं...

उसने डिब्बे के ढक्कन को घुमाया और सब ने एक साथ उसके भीतर झाँका, उसके भीतर कोई 'चमकती आँख' या लाल रंग का मानक न था अपितु मुड़ा हुआ कागज़ का एक छोटा टुकड़ा था। धीरे-धीरे राजू ने उसे खोला उसपर केवल सात अक्षर लिखे थे।

''गहराई से खोजो, समय बहुत महत्वपूर्ण है''।

श्याम उस रात बिलकुल सो न सका, दिन के वाकये बहुत ही रोमांचकारी तथा रहस्यमय थे। और अन्त में ओक्टेवियन में केवल कागज का एक छोटा सा टुकड़ा मिलना। हद हो गई।

राजू ने भी काग़ज की ओर, जाहिर है अत्यन्त निराश हो कर देखा था। उसे पूरा भरोसा था कि अन्त में 'चमकतीऑंख' उन्हें मिल ही गई है, और राजू को गलत होने से बहुत बुरा लगता था। फिर से उसने पढ़ा 'गहराई से खोजो, समय बहुत महत्वपूर्ण है'।

'परन्तु यही तो असली संदेश में भी लिखा था', महिन्दर बोला।

'जाहिर है हमने खोजा नही है.खोजो के अर्थ हैं गहराई तक खोद कर खोजो, हमने समस्या को गहराई तक खोदा नही है। मि० अगस्त ने इन प्रतमाओं का प्रयोग उन लोगों को धोखा देने के लिये किया, जिन्हें किसी प्रकार संदेश हाथ लग जाये। 'गस' वह समझते थे कि तुम समझ जाओगे।/

'परन्तु मुझे समझ नहीं आ रहा', अपनी

आँख झपकाते हुए उसने उत्तर दिया। 'हो सकता है दादाजी ने सोचा होगा, इस समस्या को सुलझाने के समय मेरे पिता मेरे साथ होंगे। परन्तु वह अपने काम के कारण न आ सके, इसके अतिरिक्त दो लोगों के लायक पैसे भी हमारे पास नहीं थे'।

'आओ फिर से संदेश को पढ़ते है', राजू ने सुझाया, और गस ने कागज़ जेब से निकाल कर मेज़ पर खोला, राजू ने दूसरे साथियों के साथ पढ़ना शुरू किया।

अगस्त अगस्त मेरे पौत्र को—

अगस्त तुम्हारा नाम है अगस्त ही तुम्हारा यश है और अगस्त में ही तुम्हारा भाग्य है। कठिनाइयों के राह में आते पहाड़ों को अपने को रोकने न देना। तुम्हारे जीवन की छाया शुरू और अन्त दोनों दर्शाती है।

गहरी खोज़ करो मेरे शब्दों का अर्थ केवल तुम्हारे लिये है मैं इससे स्पष्ट नहीं बता सकता अन्यथा दूसरे उस अर्थ को जान लेंगे, जो केवल तुम्हारे लिये है। वह मेरी है, मैंने उसके पैसे दे कर खरीदा है और मैं ही उसका मालिक हूँ, फिर भी मैं उसके दुर्भाग्य से डरता हूँ।

परन्तु पचास वर्ष बीत गये हैं, और आधी शताब्दी में उसने अपने को पवित्र कर लिया होगा। फिर भी ये छीनी या चुराई नहीं जानी चाहिये। इसे खरीदा, दिया या पाया जाना चाहिये।

इसलिये ध्यान रखना हाँलाकि समय का बहुत महत्व है। ये और मेरा समस्त प्यार, मैं तुम्हारे लिये छोड़ता हूँ।

होराशियो अगस्त

महिन्दर ने भौहें चढ़ाते हुए, कहा, 'मुझे तो इसमें अभी भी कुछ समझ नहीं आ रहा'।

'मैं भी मानता हूँ, कि पहले से अधिक मुझे भी कुछ समझ नहीं आया, गस बोला 'अगस्त में मेरा भाग्य है, ये ही इसका संदेश है'।' परन्तु यदि इसका अर्थ अगस्त की किसी प्रतिमा से नहीं है तो क्या है? हालाँकि ये अगस्त है और कल मेरा जन्म दिवस है, मेरा जन्म ६ अगस्त को ढाई बजे दोपहर को हुआ था, ऐसा मेरे पिता ने मुझे बताया है', परन्तु अगस्त माह में मेरा भाग्य कैसे हो सकता है? 'मेरे ख्याल से हमें ऐसे ही सोजाना चाहिये', वह बोला परन्तु मुझे ओक्टेवियन के टुकड़े एक बार और देखने हैं।'

महिन्दर ने राजू को ओक्टेवियन के टुकड़े दिये, राजू ने उसके सिर में बने छेद का निरीक्षण करते हुए कहा—'हाँ' मेरा विचार ठीक ही था, जाहिर है मि० अगस्त ने ये छेद 'चमकती आँख' इस प्रतिमा में से निकालने के लिये ही किया था, ताकि वह उसे किसी और अधिक सुरक्षित स्थान पर रख दें। शायद प्रतिमा उन्हें सुरक्षित न लगी होगी।'

दूसरे लड़के चुप थे उन्हें राजू के निष्कर्ष में कुछ जोड़ना न था। अन्त में पहले जासूस ने कहा 'मेरे ख्याल से अब हम और कुछ नहीं कर सकेंगे और बेहतर हैं अब हम खाना खायें। मुझे अभी ख्याल आया मुझे बहुत भूख लगी है, शायद कल कोई नया विचार दिमाग में आये।'

श्याम साईकिल ले कर घर चला गया। घर पहुँच कर वह खाने की मेज़ पर बैठ कर दिन भर सारा विवरण लिखने बैठ गया, इससे पहले कोई बात उसके दिमाग से निकल जाये। वह राजू और अपने साथियों के हिराशियो अगस्त के पुराने घर डायल केनियन' घर का नाम कुछ अजीब सा लगा, हालाँकि ये ठीक है नाम कुछ भी हो सकता है, फिर भी———

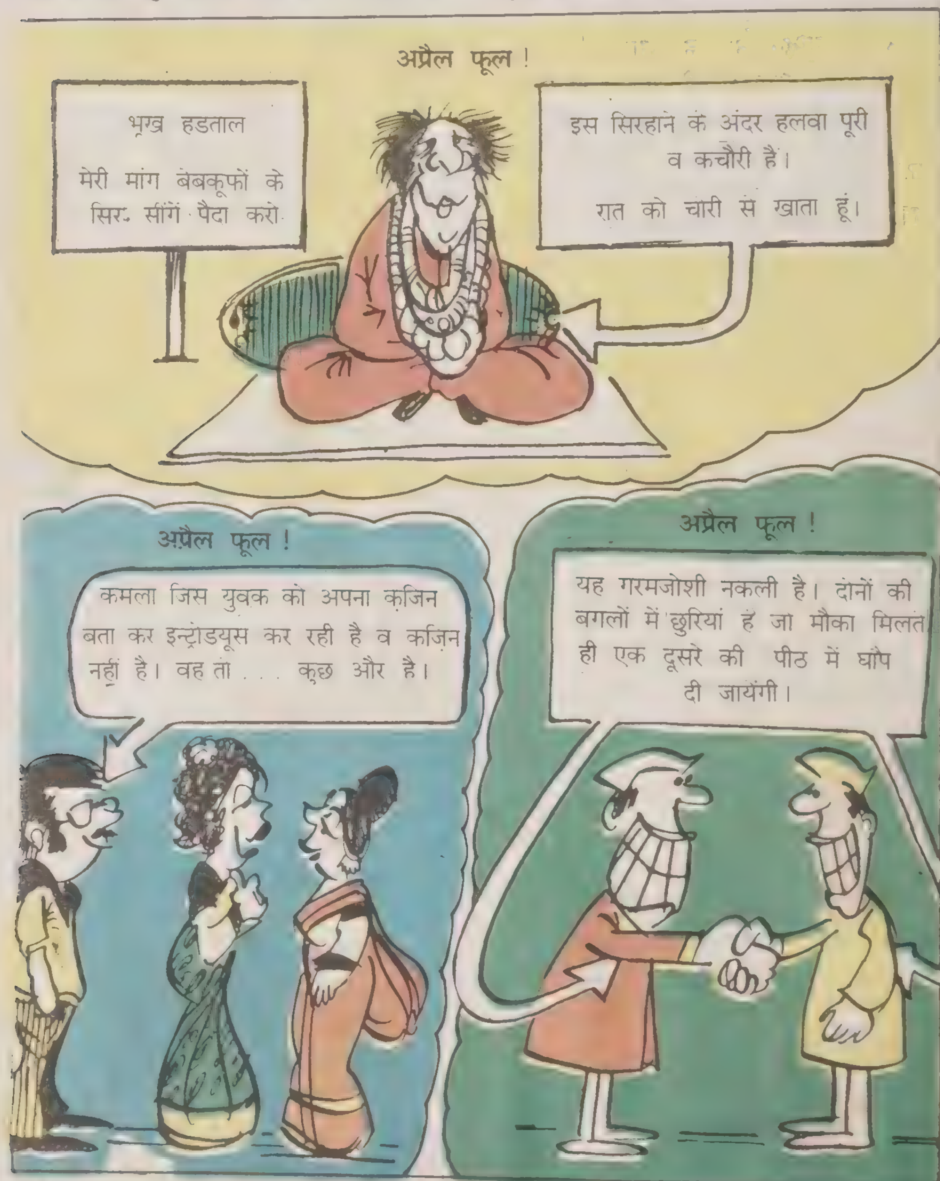
पिताजी क्या अपने शहर के उत्तरी भाग में 'डायल केनियन' जैसा कोई नाम सुना है, ये कुछ अजीब सा नाम है? वह अपने पिता से बोला।

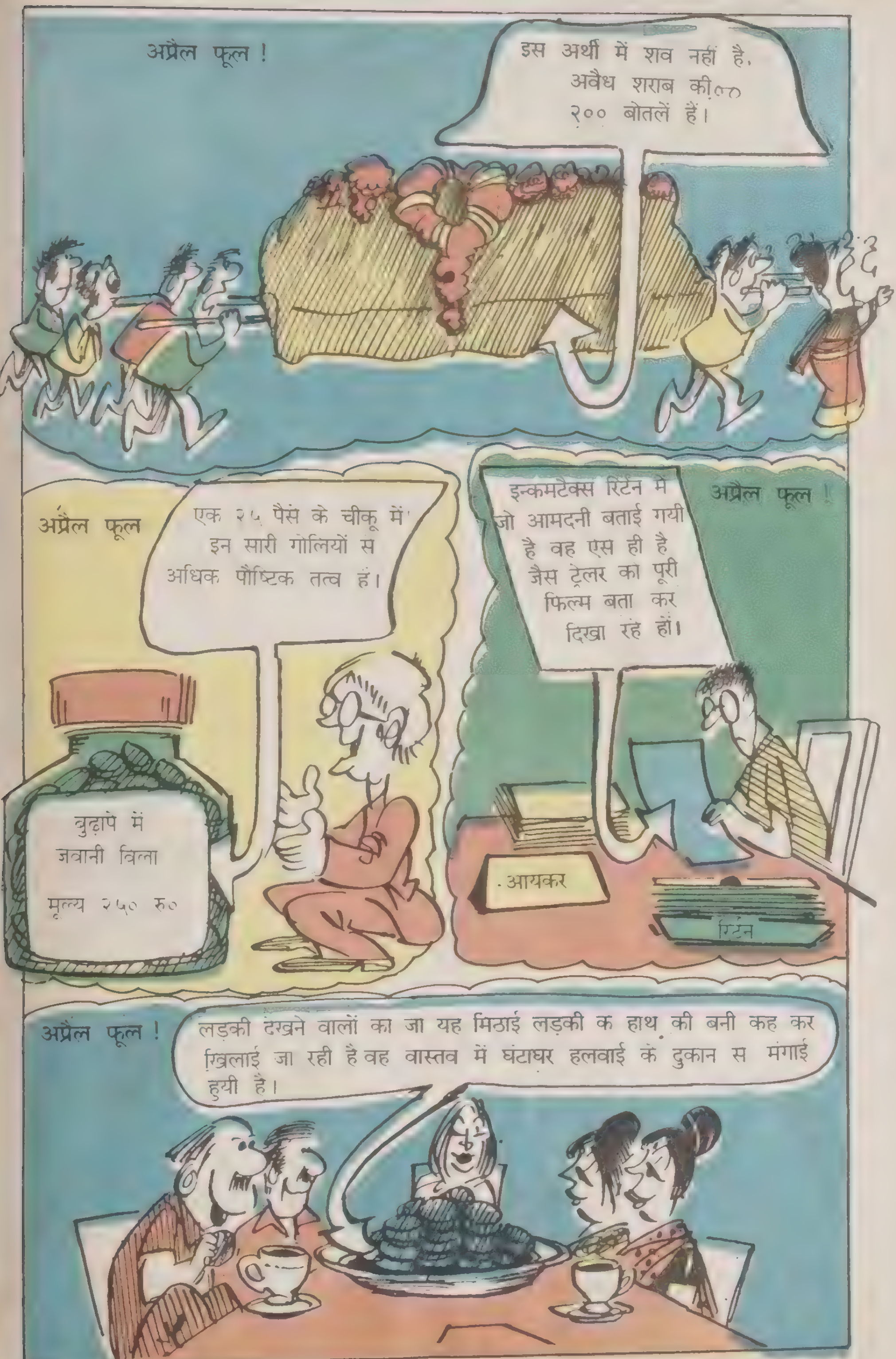
उसके पिता ने अपनी किताब जो वह पढ़ रहे थे नीचे कर उत्तर दिया। ''डायल कैनियन?'' उन्होंने दोहराया, हाँ, मुझे कुछ ध्यान तो आ रहा है, ठीक से नहीं कह सकता, रुको देख कर बताता हूँ। उठ कर उन्होंने किताब की अलमारी से एक मोटी किताब निकाली ''डायल कैनियन, डायल कैनियन'' उन्होंने दोहराया, सफे पलटते हुए। देखते हैं, हाँ ये रहा। एक अकेली छोटी 'पहाड़ी, जहाँ पहुँचना काफ़ी कठिन है, शहर

शेष पृष्ठ ५२ पर

सदाबहार अप्रैल फूल

हम भारत वासी सारे वर्ष पूरे ३६५¼ दिन पहलीअप्रैल का 'अप्रैल फूल डे' मनाते ही रहते हैं। किसी न किसी का मूर्ख बनाते रहते हैं या खुद बनते रहते हैं। वास्तव में हम सदाबहार अप्रैल फूल हैं। हमारे कैलेंडरों में एक ही तारीख हमेशा रहती है वह है प्रथम अप्रैल। हमारे सदाबहार अप्रैल फूल के बाग का छोटा सा नज़ारा देखिये




अप्रैल फूल !
इस अर्थी में शव नहीं है, अवैध शराब की २०० बोतलें हैं।
अप्रैल फूल
एक २५ पैसे के चीकू में इन सारी गोलियों स अधिक पौष्टिक तत्व हं।
बुढ़ापे में जवानी विल्ला
मूल्य २५० रु०
इन्कमटैक्स रिटर्न मे जो आमदनी बताई गयी है वह एस ही है जैस ट्रेलर को पूरी फिल्म बता कर दिखा रहे हों।
अप्रैल फूल !
आयकर
रिटर्न
अप्रैल फूल !
लड़की दखने वालों का जा यह मिठाई लड़की क हाथ की बनी कह कर खिलाई जा रही है वह वास्तव में घंटाघर हलवाई के दुकान स मंगाई हुयी है।

शेष पृष्ठ ३० पर



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

चन्द्र शेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, क्या आप ने कभी अपने रूप को बदलने पर विचार किया है ?

उ० : बड़े-बड़े लोग बहरूप को बदलने पर विचार नहीं करते फिर आप हम से रूप बदलने की आशा क्यों करते हैं ?

राजेश सूद—लुधियाना : किसी की सभी आशाओं पर पानी फिर जाये तो उसे क्या करना चाहिये ?

उ० : चिकना घड़ा बन जाना चाहिये ताकि एक बूंद पानी न टिके।

दीपक कुमार मनिन्धर, क्षेत्रपाटी—काठमांडू : फ़िल्मस्टार बनने का बहुत शौक है, क्या करूं ?

उ० : किसी अच्छे फिल्म निर्माता से सम्पर्क स्थापित कीजिये। फिल्म जगत में कितने ही ऐसे लोग हैं, जो पहले 'जूते के स्टार' थे, और देखते ही देखते फिल्म स्टार बन गये।

रमन भाटिया, प्रेम भाटिया, अरुण भाटिया—जगाधरी : क्या ऐसा होता है, कि हम जिन्हें याद करते हैं, उन्हें भी हमारी याद आती होगी ?

उ० : ऐसा न हो, यही अच्छा है, एक शायर ने कहा है :

मुझे याद करने से ये मुदआ था,
निकल जाये दम हिचकियां आते आते।

निरंजन कुमार साहु—झरिया : इश्क में अधिक जोश लड़कों में होता है, या लड़कियों में ?

उ० : दोनों तवों पे सिक रही हैं रोटियां,
दोनों तरफ़ है आग बराबर लगी हुई

प्रदीप कुमार, गुप्ता, होशंगाबाद : चाचा जी, इंसान कब हार मानता है ?

उ० : मोरारजी भाई ने तब हार [illegible] जनता पार्टी का पूरी तरह बेड़ा ग़र्क हो गया अब यह फ़ैसला करना आपका काम है कि मोरारजी भाई इन्सान हैं या नहीं ?

संजय तनेजा—पानीपत : चाचा जी, यदि भूत नाम की कोई चीज़ नहीं होती तो मनुष्य भूत के नाम से डरता क्यों है ?

उ० : अपनी श्रीमती जी को यह जताने के लिये कि कोई दूसरा भी है जिस से मैं डरता हूं।

मनजीत राय तनेजा,—गिदड़बहा : चाचा जी, "मेरी रूस गई झांजर वाली ते मेरे ला रब्ब रुठ्ठा," मैं हुन की करां ?

उ० : झांजर वाली को यह कविता लिख भेजिये :

ग़ैर को तू ने दिये हंस के सदा जाम पे जाम
सोच ले क्या कभी ल्हस्सी मुझे पिलवाई है ?

जब भी टकराया है सर दर से सदा आई है,
दफ़ा हो क्या यहीं मरने की कसम खाई है।
गुनगुनाती हुई आती हैं फ़लक से बूंदें,
कोई बदली तेरी पाजेब से टकराई है।

राम अवतार शर्मा—नागपुर : मैंने सुना है कि चीन में हर सैंतालीस सैकिंड के बाद एक बच्चा पैदा होता है। क्या यह सत्य है ?

उ० : ठीक ही सुना होगा आप ने। पर हम सोचते हैं, वह नौ महीने वाली बात क्या ग़लत है ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.


मदहोश
अरे यह तो अपने मुहल्ले का राम लाल जैसा है! लेकिन इसकी नाक को क्या हो गया?
राम लाल, तुम्हारी नाक को तो बड़ी खतरनाक बीमारी हो गयी है। डाक्टर को नहीं दिखाया? इलाज करवा लेना चाहिये। यह टैटनस की बीमारी है।
मदहोश होश में आ!
इलाज तू करवा अपनी आंखों का। अभी तेरी नाक पर घूंसा मारुंगा फिर शीशे में अपनी नाक की शक्ल देखना।

पृष्ठ २७ · से आगे


अप्रैल फूल !
वोट
यह जो कुछ वादे कर रहे हैं केवल मूर्ख ही उन पर विश्वास करें।
अप्रैल फूल !
यह वास्तव में खच्चर की लीद और लकड़ी का बुरादा है।
खाना मार्का
गरम मसाला
यह बस किसी और की है। आप की नहीं!
बस
अप्रैल फूल !
अप्रैल फूल !
यह आकर्षक बाल नकली हैं!


अप्रैल फूल !
ज़ेवर असली नहीं हैं। रोल्ड गोल्ड के और नकली हीरों वाले।
अप्रैल फूल !
बाबा ने यह लॉकेट अपने चोगे की बाँह में हाथ की सफाई से निकाला है। चमत्कार द्वारा हवा से पैदा नहीं किया।
अप्रैल फूल !
इस राशन कार्ड में दर्ज परिवार के ११ सदस्यों में से आठ तीन वर्ष पूर्व मर चुके हैं। लेकिन राशनकार्ड में अब भी जिंदा हैं।
राशन की दुकान
अप्रैल फूल !
इस अंगूठी को इससे पहले, रीता, नीता, प्रेमा व विमला पहन चुकी है।

क्यों और कैसे

प्र० : खो जाने पर हम गोल-गोल चक्कर क्यूँ लगाते हैं?

भूपेन्द्र सिंह, हल्दवानी।

उ० : यदि किसी से शर्त जीतनी हो तो इसका अचूक तरीका है कि किसी की आँखों पर पट्टी बाँध कर सड़क पर सीधे चलने को कह दो। वह अवश्य ही शर्त हार जायेगा क्योंकि कुछ ही समय बाद वह गोल चक्कर लगाने लगेगा।

धुंध या बर्फ़ के तूफान में फंसे यात्री घंटों ये सोच कर की वे सीधे आगे बढ़ रहे हैं चलते पाये गये हैं, परन्तु वे बहुधा वापिस अपने चलने के स्थान पर ही पहुँच जाते हैं।

अपनी आँखों की सहायता के बिना सीधे न चल पाने का कारण है कि हमारा शरीर असममित या विषम है। इसका अर्थ है हमारे शरीर के दायें तथा बायें भाग में पूर्ण समानता नहीं है। उदाहरण के लिये हृदय हमारे शरीर में बायीं ओर है तो जिगर दायींओर है। हमारे शरीर का ढाँचा भी विषम है। हमारी रीड़ की हड्डी भी बिलकुल सीधी नहीं है। हामरी जाँघें तथा हमारे दोनों पैरों में भी अन्तर है। इस सब का अर्थ है कि हमारे शरीर की माँसपेशियां भी विषमतापूर्ण या पूरी तरह समान नहीं हैं।

तथा क्योंकि हमारे शरीर की माँसपेशियाँ दायें तथा बायें भाग में भिन्न हैं इसका प्रभाव हमारे चलने पर पड़ता है। और आँखें बंद कर लेने पर हमारी चाल शरीर की माँसपेशियों तथा ढाँचे पर निर्भर हो जाती है तथा शरीर का एक भाग हमें एक विशेष दिशा में मोड़ देता है तथा हम गोल चक्कर लगाने लगते हैं। असमानता केवल हमारी टाँगों में ही नहीं वरन् हमारी बाँहों की माँसपेशियों में भी है। इस को प्रमाणित करने के लिये आँखें बन्द कर लोगों से कार चलवाने का प्रयत्न करने पर देखा गया, केवल बीस सैकंड के ही बाद कार सड़क से हट कर चलने लगी। इससे प्रमाणित होता है हमें चलते या कार चलाते समय अपनी आँखें पूरी खुली रखनी चाहिये।

प्र० : पेड़ पौधों की उत्पत्ति कब और कैसे हुई?

उ० : क्या ऐसा भी कोई समय था जब संसार में पेड़ पौधे बिलकुल नहीं थे। वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार इसका उत्तर 'हाँ' है। तब लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व प्रोटोप्लास्म के नन्हें नन्हें धब्बे पृथ्वी पर उभर आये। प्रोटोप्लास्म उस जीवन तत्व को कहते हैं जो पेड़ पौधों और पशुओं में पाया जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार प्रोटोप्लास्म के ये नन्हें धब्बे ही वनस्पति जीवन का आरम्भ थे। इसे ही पशुओं का भी आरम्भ माना जाता है।

इस प्रोटोप्लास्म के धब्बे जो बाद में पेड़ और पौधे बने एक स्थान पर टिक गये और अपनी दीवारें मोटी कर लीं। इन्होंने धीरे-धीरे क्लोरोफिल जो पौधों का हरा तत्व होता है तथा जिसकी सहायता से वे उस समय हवा, पानी तथा मिट्टी से अपना भोजन बनाते थे का भी विकास कर लिया।

आरम्भिक हरे पौधों में केवल एक ही 'सैल' या अणु था परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने अणुओं के समूह बना लिये। और क्योंकि ये पौधे सूखने से बच नहीं पाते थे इस लिये अधिकतर पानी में ही रहते थे। आज भी इन प्राचीन मौलिक पौधों के कुछ वंशज पाये जाते हैं हालाँकि वे काफी बदल चुके हैं। हम उन्हें शैवाल कहते हैं।समुद्री वनस्पति इन पौधों की एक किस्म है।

पृथ्वी के अधिकतर आज पाये जाने वाले

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

गन्ना पकाने वाला रसायन—

अगले दस वर्ष में संसार में चीनी की खपत २५ प्रतिशत बढ़ जायेगी। एक नये रसायन 'पोलारिस' जिससे चीनी का उत्पादन २५ प्रतिशत बढ़ेगा, का स्वागत है।

गन्ने में भिन्न प्रकार की प्राकृतिक चीनी होती है जिससे कई प्रकार की चीनी बनाई जाती है।

गन्ना जब बढ़ता है तो ये एक प्रकार की चीनी बनाता है जो ये अपने लिये उर्जा के रूप में प्रयोग में लाता है और जब पौधा बढ़ना बन्द हो जाता है तो ये तने में चीनी एकत्रित करनी आरम्भ कर देता है। गन्ने के पौधे में इस समय सबसे अधिक चीनी होती है और इसी कारण ये ही गन्ने की फसल काटने का सबसे उपयुक्त समय होता है। परन्तु यदि इस बीच वर्षा आ जाये तो पौधा फिर से बढ़ना आरम्भ हो जाता है और अपने तने में एकत्रित चीनी का इस्तेमाल कर लेता है।यह अपने में एक बड़ी समस्या है।

अब इस समस्या का हल पोलारिस नामक एक रसायन से निकाला गया है। इस रसायन को गन्ने के काटने के चार से तेरह सप्ताह पहले हवा से छिड़कने पर गन्ना जल्दी पक जाता है और इस प्रकार गन्ना काटने का समय बढ़ जाता है, और किसान को इसके लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इस प्रकार पके गन्ने में पकने पर चीनी अधिक से अधिक मात्रा में होती है।

पोलारिस छिड़के गन्ने में बिना रसायन छिड़के गन्ने से अधिक, बढ़िया चीनी प्राप्त होती है। रसायन छिड़के गन्ने में गन्दगी कम होती है और इसका अधिक भाग प्रयोग किया जा सकता है।

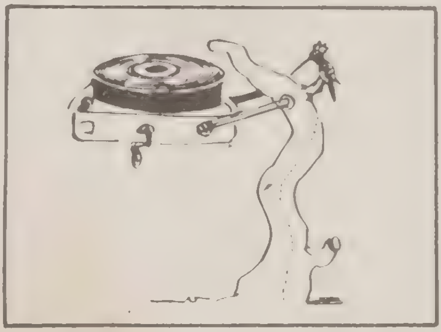
←

पौधे इन्हीं शैवाल से विकसित हुए हैं। इनमें से कुछ समुद्र से बाहर आ गये और उनकी जड़ों का विकास हुआ, जिनकी सहायता से वे पृथ्वी पर खड़े हो सके। इन वनस्पतियों के मोटी त्वचा वाली छोटी पत्तियाँ भी विकसित हुई जिससे सूखने से इनकी रक्षा होने लगी। ये पौधे बाद में पर्णाणं तथा काई के रूप में विकसित हुए।

इसके अतिरिक्त पौधों की एक किस्म है जो क्लोरोफिल के बिना ही अपना भोजन बनाती है इन्हें खुम्भ कहा गया इसमें खुम्बी, ढींगरी, इत्यादि आती हैं।

सारे ही आरम्भिक पौधे अणु विभाजन या स्पोरस जो की नन्हें मिट्टी के समान अणु होते हैं जो बीज के समान होते हैं, परन्तु स्पोरस में बीज के समान भोजन एकत्रित नहीं होता। समय के साथ-साथ इन पौधों में फूल विकसित हुए और इनमें असली बीज उत्पत्ति हुई।

आज हम पौधों और वृक्षों का बहुत विकास कर चुके हैं। इनमें दो प्रकार के बीज उत्पन्न हुए एवं जो थे उनमें खुले बीज थे तो दूसरे रक्षित बीज थे। दोनों ही प्रकार के बीज आगे जा कर भिन्न-भिन्न रूप से विकसित हुए। इस प्रकार हमने देखा पौधों को जीवन का आरम्भ कहाँ से हुआ। कम से कम ये सिद्धाँत वैज्ञानिक समझा जाता है।



सच्ची बात—

आकाश में चमकने वाली एक बार की बिजली से ३,७५० लाख किलोवाट बिजली उर्जा उत्पन्न होती है। "इस उर्जा का लगभग ७५ प्रतिशत भाग आसपास के वायुमंडल में गर्मी के रूप में फैल कर तापमान को २७,०००°F तक बढ़ा देता है, इस के फलस्वरूप यहां की हवा अकसमात फैल जाती है जिससे ध्वनि तरंग उत्पन्न होती है, जो बिजली की गड़गड़ाहट के रूप में अट्ठारह मील तक की दूरी तक सुना जा सकता है।



आगामी अंक में फिर बुरी तरह फंसिये.


इस घर में
घर जवांई की जगह खाली है
किस्मत आजमाइये
दीवाना

शीर्षक प्रतियोगिता



चित्र में आप देख रहे हैं कि कुत्ते मियां बिल्ली रानी को अखबार से कोई मजेदार शीर्षक (हैडलायन) पढ़ कर सुना रहे हैं। आपको यह सुझाना है कि कुत्ते मियां किस खबर के शीर्षक का जिक्र कर रहे हैं। शीर्षक केवल एक वाक्य में हो सर्वाधिक मनोरंजक सुझाव को पुरस्कार—अन्तिम तिथि-१-५-२१.

10 रु० जीतिये

____

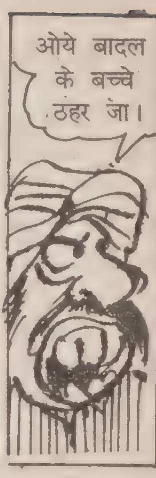
नाम ______________________

पता ______________________


सिलबिल पिलपिल
लव लैटर का प्रसाद
ठहर चूहे मेरे नज़दीक मत आइये। मै बोत प्राइवेट और ज़रूरी काम कर रिया हूं।
आज तक तो मुझ से किसी बात की चोरी नहीं थी, मुझ से कुछ छुपाता नहीं था, यहां तक कि अपना फटा अन्डंरवियर भी मेरे सामने ही सींता था, अब क्या बात हो गयी?
बात ही कुछ ऐसी है।
मै लव लैटर लिख रिया हूं।
लो लैटर यानि कि पिरेम पत्तर?
हां वही। यह मेरी जिन्दगी का पहला प्रेम पत्र है। मेरे दिल में भावनाओं का समुद्र उमड़ रहा है। तू नज़दीक आयेगा तो उसमें डूब जायेगा। पहला प्रेम पत्र बड़ा नाजुक होता है। मेरे सारे शरीर में पसीना आ रहा है। यहां तक कि पैन भी हाथ से फिसल रहा है। बार-२ तौलिये से हाथ पौंछना पड़ता है।
वह तो सब ठीक है लेकिन एक बात समझ में नहीं आ रही है कि इस कमरे से अजीब सी
बदबू कैसी आ रही है? ऐसी बदबू तो उस कमरे से आया करती है जहां छोटा बच्चा होता है और जब उसको दूध हज़म नहीं होता तो वह . . .कर देता है। मीठी-मीठी सी बदबू, यहां तो कोई बच्चा नहीं है।
ऐंह


शऽऽऽ ! जादा शोर मत मचा। तुझे मैं बता देता हूं। यह मेरा पहला प्रेमपत्र होने के कारण मैं इतना नर्वस हो गया कि मैंने भी धोती में वही कर दिया जो बच्चे करते हैं।
फूऽऽऽऽ ! यह मैंने पहला धोती प्रशाद देखा जिसने प्रेमपत्र लिखते समय ऐसा करिश्मा कर दिखाया हो। अगर ऐसी ही बात थी तो ज़रा अक्ल से काम लेता और बाथरुम में बैठ कर लिखता प्रेमपत्र।
नादान चूहे, तुझे क्या पता कि प्रेमपत्र लिखते समय दिल की क्या हालत होती है। तूने स्वयं कभी प्रेम पत्र लिखा हो तो जाने। चौथी जमात का फाइनल पर्चा हल करते समय उतनी दहशत नहीं हुयी थी जितनी इस प्रथम प्रेम पत्र को लिखते हुयी।
दिल ऐसा करता है कि लिफाफे में इस प्रेम पत्र के साथ अपना कलेजा निकाल कर नत्थी करके भेजूं। ताकि इन बेजान शब्दों की जगह कलेजा खुद तड़फ-तड़फ कर अपना हाल कहे।
तो भेज क्यों नहीं रहा है ? क्या किसी ने तुझे रोका है ? या तेरी प्रेमिका शुद्ध वैजिटेरियन है ?
प्रेम वैजिटेरियन/नॉन वैजिटेरियन का भेद नहीं जानता।

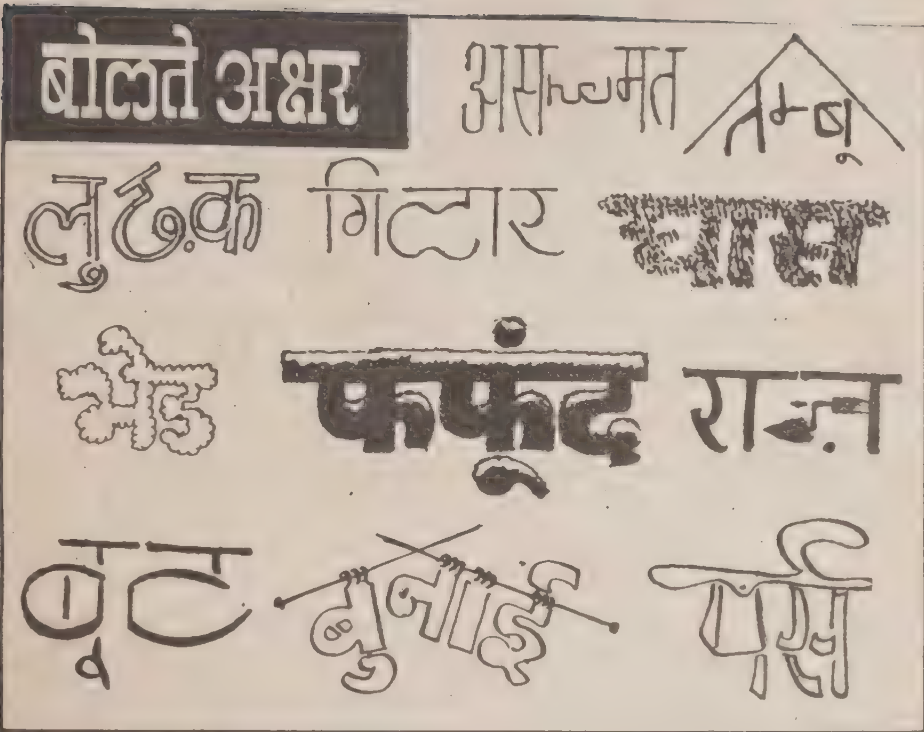

प्रेम के रंग अनोखे होते हैं। प्रेम करने वालों की दुनिया ही अलग होती है। दिल हमेशा चांद सितारों से बात किया करता है। अब यही देख ले मैं यह प्रेम पत्र लैटर बक्स में डालने जा रहा हूं और मुझे यह लग ही नहीं रहा कि धरती पर चल रहा हूं। ऐसे लग रहा है जैसे बादलों के बीच में से चल रहा होऊं . . .


ओये बादल के बच्चे ठहर जा।


तेरी आंखें फुटी हुयी है जो नज़र नहीं आता कि किधर से जा रहा है? मैंने रूई धुनने के लिये नीचे फैला रखी है। यह उस पर से चल रहा है और कहता है बादलों के बीच में से चल रहा हूं। एक तो वैसे ही सर्दियां खत्म होने पर रुई धुनियों को काम नहीं मिलता, कहीं एक आध ग्राहक टकर भी जाये तो काम बिगाड़ने वाले ऐसे घनचक्कर मिल जाते हैं। ठहर! बादल तो तूने देख ही लिये अब मैं तारे दिखाता हूं तुझे।
ऐंह!


याड़ी हिम्मत न हार और दिल छोटा न कर! यह तो मुहब्बत की राह में मिलने वाला प्रसाद है। प्रेम करने वालों को पिटाई और जूते तो ऐसे मिलते हैं जैसे स्पार्टस में मैडल और कप मिलते हैं। तूने तो एक घूंसा ही खाया। मजनूं ने लात और पत्थर तक खाये थे। यह तो प्रेम व्यंजन के साथ खाया जाने वाला टॉनिक है। विटामिन बी काम्पलैक्स है। चल आगे चल और अपना प्रेम पत्र लैटर बक्स में डाल।


चूहे, लैटर तो डाल दिया लेकिन दिल में शंका बनी हुयी है। पता नहीं यह लैटर निकलेगा या नहीं। शायद पोस्ट आफिस वाले इसे न खाली करने का फैसला करें या डाक कर्मचारी अचानक हड़ताल पर चले जायें। भूकम्प भी आ सकता है और यह बक्स नष्ट हो सकता
है। कोई नक्सलवादी आकर इस पर बम ही न फैंक दे। ऐसा करते है यहीं बैठ कर इंतजारी करते हैं। पोस्ट आफिस वालों को पत्र निकाल कर ले जाते देखूंगा तो दिल को तसल्ली मिलेगी।
तुम दोनों को मै यहाँ एक घण्टे से बैठा देख रहा हूं। चलो! थाने चलो।
थाने लेकिन हमने क्या किया है? हम तो चुपचाप बैठे हैं।
मै सब समझता हूं। कल एक गुमनाम खत में धमकी दी गयी थी कि सामने वाले बैंक पर डाका पड़ेगा। तुम शायद उसी गैग के मैम्बर हो, यहां बैठ कर पुलिस की गतिविधियों का जायजा ले रहे हो। जो कुछ सफाई देनी हो थाने चल कर देना।
तुम दो मेरा कबाड़ा करके ही रहोगे। पता नहीं करते क्या रहते हैं? लैटर डालने गये और पहुंच गये पुलिस स्टेशन। मुझे दौड़ धूप करके इनकी जमानत का इंतज़ाम करना पड़ा। अगर मेरे बाल आने वाले भी होंगे तो भी वह जड़ों में ही मुरझा जायेंगे। बाहर निकल ही नहीं पायेंगे।
सचमुच प्रेम पत्र लिखना तो बड़ा टेढ़ा काम है। इस बात का आज ही पता लगा दफा ३०२ और ३०७ लागू होते-होते रह गयी।
पुलिस स्टेशन


बोलते अक्षर

प्रेम पत्र

के जवाब दफ़्तरी स्टायल में

प्रेम पत्रों के उत्तर अगर दफ्तरी स्टायल में दिये जायें तो बड़ा आनन्द आयेगा। अगर बाबुओं को प्रेम पत्र पर भी अपनी दफ्तरी भाषा का लेप लगाने का जन्मसिद्ध अधिकार मिले तो . . . ? ज़रा नमूना देखिये

प्रियतम राजेश,

कितने कठोर हो तुम! कल मिलने का वादा कर के भी मिलने नहीं आये!

मैं बहुत देर तुम्हारी राह देखती रही। तुम क्या जानो मुझ पर क्या गुज़री। मैं तुमसे कितना प्यार करती हूं। मेरा प्यार सच्चा सोना है। तुम्हें देखते ही मेरा दिल जोर-२ से धड़कने लगता है। सारे शरीर में सरसराहट सी होती है। नब्ज तेज चलने लगती है। अब तुम्हारे बिना जी नहीं पाऊंगी।

तुम्हारे पत्र के इन्तजार में . . .

रजनी

उत्तर दफ्तरी स्टायल में

कलर्क राजेश का

प्रियतमा रजनी,

तुम्हारा प्रेम पत्र दिनांक X क्रम संख्या "X" प्राप्त हुआ।

मुझे खेद है कि आपने पत्र के साथ डाक्टरी का सर्टिफिकेट नहीं भेजा. दिल जोर से धड़कने का व ब्लड प्रैशर बढ़ने का MBBS डाक्टर का सर्टिफिकेट तुरन्त भेजिये। तब तक आगे कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती।

आपका

राजेश

डा० राजेश का

Prescription Slip

Dr Rajesh MBBS

Name

Patient—रजनी

Age—१९ वर्ष

Disease—प्रेम रोग

Prescription—

ऐस्प्रो—४ गोलियां

विटामिन बी काम्पलैक्स —२ गोलियां

प्रतिदिन

१५ दिन

मास्टर राजेश का उत्तर

प्रिय रजनी,

तुमने प्रेम पत्र फिल्मी डॉयलाग अन्दाज में लिखा है। अच्छे निबन्ध लिखने की कोशिश किया करो और हैंडराइटिंग सुधारने पर ध्यान दो।

कोमा और फुलस्टाप कई जगह नहीं लिखे हैं। मैं तुम्हें दस में से चार से ज्यादा नम्बर नहीं दे सकता!

मास्टर
राजेश

पी. डब्ल्यू. डी. इंजीनियर राजेश का उत्तर

डियर मैडम,

आपका प्रेम टैंडर मिला। मेरे पास और लड़कियों के टैंडर भी हैं। परसों शाम को चार बजे आप भी बुद्धा जयन्ती पार्क में आयें। वहां सबके सामने सारे प्रेम पत्र खोले जायेंगे। जिसके दिल धड़कने का रेट सब से कम होगा उसे मैं अपने प्यार का ठेका दे दूंगा।

आपका
राजेश

बैंक क्लर्क का उत्तर

प्यारी रजनी,

तुम्हारा ड्राफ्ट मिला जिस पर किये हस्ताक्षर मेरे पास तुम्हारे पिछले खतों में जो स्पेसीमेन सिगनेचर हैं उनसे मिलाने पर नहीं मिले। अतः इसे स्वीकार नहीं करूंगा।

हमारे बैंक में तुम्हारे जान पहचान की कोई लड़की है तो उससे सिगनेचर एटेस्ट करवा कर अपना प्रेम पत्र दोबारा भेजो।

तुम्हारा
राजेश
प्रेम खाता न० ११८३१९.

इन्श्योरैंस ऐजेंट राजेश का उत्तर

मिस रजनी,

आपके पत्र को पढ़ कर ऐसा लगा कि जैसे आपको ब्लड प्रैशर की बीमारी है। कृपया बतायें आपकी माता जी किस रोग से मरी थीं। आपके खानदान में कोई पुश्तैनी बीमारी तो नहीं चल रही है।

आपको कोई बीमारी न हो तभी आपके प्रेम की बीमा पालिसी मैं स्वीकार करूंगा।

आपका अपना
राजेश
इन्श्योरेंस एजेंट

सम्पादक राजेश का उत्तर

रजनी जी,

आपकी रचना मैंने अपने मन मन्दिर में छापने के लिये स्वीकार कर ली है। कृपया आप अपनी प्रेम रचनायें विचार के लिये किसी और को न भेजें।

कल वोल्गा रेस्टोरेंट में आपको पारिश्रमिक के तौर पर ट्रीट करूंगा।

आपका
राजेश
सम्पादक फिल्मी बिल्ली

इनकम टैक्स अफसर राजेश का उत्तर

प्रियतमा,

तुम्हारा प्रेम रिर्टन मिला। तुमने पिछले रिर्टन में भरा था कि तुम्हारा प्यार फूल की तरह है लेकिन इस रिर्टन में उसे सच्चा सोना बता रही हो। इससे साबित हुआ कि तुमने अपना प्रेम खजाना जानबूझ कर गलत भरा था। आगे की कार्यवाही के बारे में आपको बाद में सूचित किया जायेगा।

आपका
राजेश I.T.O.

मीटर रीडर राजेश का उत्तर

प्यारी रजनी,

तुम्हारा बिल मिला। हम दोनों के अंधेरे जीवन में प्यार की बिजली कुछ ज्यादा ही फुक रही है। बिल इतना आ रहा है कि कल मैंने बटुवे का मीटर देखा तो रीडिंग जीरो थी इसलिये मैं न आ सका।

कल प्रेम ब्लैक आऊट रहा इसका मुझे खेद है।

तुम्हारा
राजेश

यूनिवर्सिटी लैक्चरर राजेश का उत्तर

प्रिय रजनी,

मुझे तुम्हारा कभी प्रेम पत्र लिखना और कभी खुद मिलना ठीक नहीं लगता। या तो तुम केवल प्रेम पत्र ही लिखो या मिलने का ही काम करो।

क्योंकि दो नावों पर पैर रखने पर प्रेम फेल हो सकता है। या तो पार्कों में प्रेम क्लासिज की रैगुलर स्टूडेंट बनो या केवल कॉरेस्पोंडेंस कोर्स ही करो।

तुम्हारा अपना ही,
राजेश

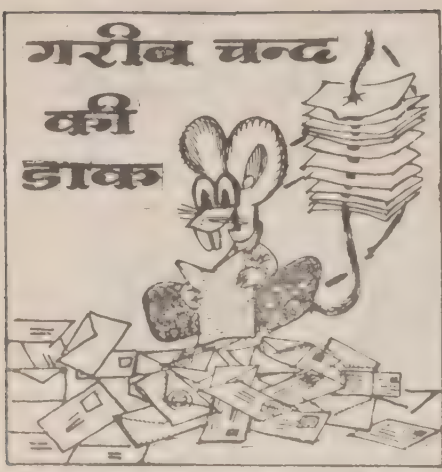


फैण्टम -जंगल शहर
खोपड़ी गुफा, घने जंगल !
कर्नल 'वोरुबू ये अत्यन्त गुप्त है
राष्ट्रपति लुआगा आज हवाई अड्डे से गये थे, वे लापता हैं !
'गायब'!
FALK & BARRY 10/22
अब आप और मैं इसे जानते हैं। उनके जाने के विषय में पूरा ब्यौरा दीजिये, समझे ?
हाँ, श्रीमान
परन्तु क्या ?
गये . . . वे कौन है ? क्या मैं दुबारा उन्हें देख सकूँगा ?
क्लिक !
वे फैन्टम के विवाह में शामिल हुए थे परन्तु उन्हें पता न था।
रुको ! इस षडयन्त्र के पीछे कौन है ? तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो ? मैं ये जानने का हुक्म देता हूँ।
राष्ट्रपति लुआगा, अब हम आपकी आँखों पर पट्टी बांधेंगे !
आप कुछ भी जानने का हुक्म नहीं दे सकते !
ऐसा ही लगता है।
हमारी आपसे कोई जाति दुश्मनी नहीं है, लुआगा। आप एक अच्छे राष्ट्रपति थे, परन्तु अब कोई और बनने वाला है।
FALK & BARRY 10/23
धुंधले पहाड़ की राजकुमारी के राज्य में जहाँ के लोगों के दिल और दिमाग पूरी तरह १५वीं शताब्दी में हैं।
FALK & BARRY 10/24
हमारे 'मेहमान' पहुँच रहे हैं, जनरल !
ये सब कितना आसान था जनरल बाबाबू !
और बाकी . . . मेरे देश का शासन सम्भालने की बात रही, प्रिंस अगोरडा वह भी इतनी ही सरल होगी।
ये कौन सा स्थान है ? मैं कहाँ हूँ ?
शान्त रहिये राष्ट्रपति, सब कुछ समझा दिया जायेगा।
FALK & BARRY 10/25
भूतपूर्व राष्ट्रपति लुआगा है, मेरे ख्याल से
बाबाबू !


हवाई अड्डे पर . . .
हाँ, राष्ट्रपति आज सुबह निजी यात्रा पर गये थे इसका कुछ भी प्रचार नहीं किया गया।
क्या उन्होंने कोई संदेश छोड़ा था, कहाँ जा रहे हैं ?
वे कभी भी नहीं बताते, उन्हें एकांत पसन्द है। ओह, आज एक छोटी सी बात हुई थी, कोई महत्वपूर्ण नहीं है।
क्या ?
जंगल सुरक्षा मालूमात कर रहे थे, लगता है कुछ शक है ?
उन्हें शक क्यों होगा ? हमारा प्लैन बढ़िया तरीके से सफल रहा।
जंगल सुरक्षा हैडक्वाटर।
मुझे × बैंड के कमाँडर से बात करवाओ।
अच्छा, श्रीमान !
हमने राष्ट्रपति की यात्रा की पूछताछ की— नियमित, एकाँत पसन्द करते हैं। बहुधा गुप्त यात्रा करते हैं . . .
FALK & BARRY 10/27
ओह, हाँ, उन्होंने अपने निजी चालक कैप्टन लोगू की बात की थी, बीमार हो गये, आखिरी समय पर बदलना पड़ा
कैप्टन लोगू का तुरन्त पता लगाओ !
?
कर्नल बोरोबू कमाँडिंग ऑफीसर जंगल सुरक्षा . . .
राष्ट्रपति के निजी चालक कैप्टन लोगू जो बीमार कहे जाते हैं अभी तक हम उनका कुछ पता नहीं लगा सके, श्रीमान् !
उनके बदले हवाई सेना के मेजर कोरोटा तथा लेफ्टीनेन्ट रामोस गये हैं . . .
उनका पता नहीं चल रहा ? क्या आपने अस्पताल, उनके घर और बैरकों में ढूंढ़ा है ?
अरे . . . क्या राष्ट्रपति खतरे में हैं ?
गायब हैं, परन्तु ये बात फैले न, इससे आतंक फैल जायेगा
?
कोरोटा तथा रामोस के घनिष्ट मित्रों की लिस्ट मेरी सेफ में रख दो समाप्त !
FALK & BARRY 10/29
क्या राष्ट्रपति लुआगा को कुछ हो गया है ?
मुझे इसी का डर है, उन्हें कल यहाँ पहुंचना था और वे गायब हैं ?
षड्यन्त्र प्रतीत होता है, कितनी चालाकी है, केवल हमें ही जानते हैं वे गायब हैं।
गुड नाइट हैलोइस और किट, आराम से सोओ !
FALK & BARRY 10/30
ओह ! कृपया उन्हें ढूँढ़िये।
मैं बहुत शीघ्र कोशिश करता हूँ गुड बाई प्रिये !



कर्नल बोरुबू सी.ओ. जंगल सुरक्षा।
श्रीमान् जो लिस्ट आपने मांगी थी मेजर कोरोटा तथा रामोस के घनिष्ठ सम्बन्ध !
धन्यवाद सारजैंट
उन्होंने ये दरवाजा महीनों से नहीं खोला। यहीं पर इन्हें कमाँडर के निर्देश प्राप्त होते हैं। कैसे ? इसके भीतर क्या है ?
अन्दर . . .एक खाली कमरा . . .कोई खिड़की नहीं . . .एक सेफ . . .
ये मुझे कभी मालूम नहीं होगा कमाँडर. इसमें से लिस्ट कैसे निकालेगा या निर्देश यहाँ छोड़ेगा या वह कौन है, परन्तु वह ऐसे ही चाहता है।
रात्रि को . . जंगल सुरक्षा के हैडक्वाटर के बाहर . .
जहरीला कुंआ, बन्द किया हुआ. दूर रहो हुक्म . . . जंगल सुरक्षा !
जहरीला कुआ इसे इस्तेमाल न करें.
डैविल रुको, हीरो रुको !
फैन्टम का जंगल सुरक्षा के हैडक्वाटर के नीचे एक गुप्त कमरे का गुप्त रास्ता।
FALK BARRY 11/1
जंगल सुरक्षा हैडक्वाटर के नीचे, गुप्त कमरा !
मैंने कर्नल बोरुबू से मेजर कोरोटा तथा लैफ्टीनेन्ट रामोस के घनिष्ठ मित्रों की लिस्ट माँगी थी, राष्ट्रपति लुआगा तक पहुँचने का एकमात्र ज़रिया !
FALK BARRY 11/2
लिस्ट बढ़िया, सुरक्षा अचम्भित है कि निर्देश इस सेफ में कैसे पहुंचते हैं उन्हें सोचते रहने देना ही ठीक होगा !
अब उन मित्रों को खोजो
कैप्टन लोग हम चलने वाले हैं, क्या तुम हमारे साथ हो ?
तुम चाहते हो मैं राष्ट्रपति लुआगा को उस बदमाश बाबू के लिये धोखा दूं।
वहशी, डिक्टेटर . . .
बेवकूफ ! ये तुम्हारी मौत का परवाना है !
ठीक है
मुझे प्यास लगी है, जब मै वापिस आऊंगा तो तुम्हें खत्म कर दूँगा !
मुझे एक . . .और कुछ सिगरेट भी . . .



धर्मेन्द्र कुमार दुर्धा—रायपुर : गरीब चंद जी, कृपया यह बताने का कष्ट करें कि आपके पिता का क्या नाम है तथा वे कहां रहते हैं ताकि मैं उनसे आपकी शैतानी के बारे में बताऊं कि आप मेरे कार्ड कुतर कर खा जाते हो ?

उ० : मेरे पिताजी अपना नाम बताने से पहले ही राम नाम बोल गये।

बलजीत सिंह राणा—हरियाणा : "आपकी बिरादरी वालों ने मेरी कुछ पुस्तकें कुतर डालीं, कृपया उन्हें समझाइये न।"

उ० : आप क्या चाहते हैं कि वह आपकी पुस्तकें कुतरने की बजाय कांटे छुरी को काट-२ कर खायें ?

कन्हैया लाल बाधवानी, अमला टोला कटिहार—बिहार : आपने अपना नाम "गरीब चन्द" क्यों रखा है। क्या मैं आंपके सर्वश्रेष्ठ नाम के लिए राय भेजूँ। कृपया बताएँ।

उ० : मैं अपना नाम बदलना नहीं चाहता। कहते हैं कि दाने-दाने पर खाने वाले के नाम की मोहर लगी होती है। अगर मैं नाम बदल लूं तो गरीब चन्द नाम की मोहर लगे दाने कोई और हड़प जायेगा।

शिवमोहन परनामी—जबलपुर : गरीब चन्द, आप हेमा मालिनी के साथ कौन सी फिल्म में काम कर रहे हैं।

उ० : यह मैं नहीं बता सकता। बता दिया तो उन फिल्मों से धर्मेन्द्र मुझे कटवा देगा।

प्रकाश चन्द्र जूनबड़वाहा—(म०प्र०) : क्या गरीब चन्द जी आप गरीब से दोस्ती करते हो या नहीं ?

उ० : करता हूं अगर मुझे पता लग जाये कि गरीब को पैसे उधार मांगने की आदत नहीं है।

जोगेन्द्र कुमार गोस्वामी—नई दिल्ली (आश्रम) : गरीब चन्द जी आप का नाम गरीब चन्द है ! या आप सचमुच ही गरीब हैं ! अगर आप सचमुच ही गरीब हैं तो मैं क्या आपकी कुछ मदद करूं ?

उ० : आप मेरी एक ही मदद कर सकते हैं वह यह कि दोनों कान पकड़ कर ग्यारह उठक-बैठक लगाने के बाद प्रण कीजिये कि उम्र भर चूहे मारने की दवा या चूहेदान नहीं खरीदूंगा।

संजय गर्ग—मसौधा फैजाबाद : माई डीयर गरीब चन्द जी, क्या आप बता सकते हैं कि विश्व में आप के बिरादरी वालों की कुल जनसंख्या कितनी है ?

उ० : हमारी बिरादरी की जन-गणना नहीं होती। हमें कौन से राशनकार्ड बनवाने हैं ?

एम० एस० गुजराल—करनाल : गरीब चन्द जी आप इतने अकलमन्द होते हुए भी सिलबिल और पिलपिल दो मुर्खों के साथ क्यों रहते हैं।

उ० : मुझे ईमानदारी अच्छी लगती है और ईमानदारी आजकल मूर्खों में ही पायी जाती है।

बी० एन० 'भास्कर'—धनबाद : डीयर गरीब चन्द, क्या आप कभी अमीर होने की आशा रखते हैं ?

उ० : भारत के ७० करोड़ लोग यही आशा रखे हुये हैं मैं तो वही चीज़ रखता हूं जो औरों ने न रख रखी हो।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दीवाना कैमल रंग भरो प्रतियोगिता—१८ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता—नागपुर
द्वितीय पुरस्कार—कुमारी संतोष—दिल्ली
तृतीय पुरस्कार—सुजानसिंह—नई दिल्ली

कैमल आश्वासन पुरस्कार

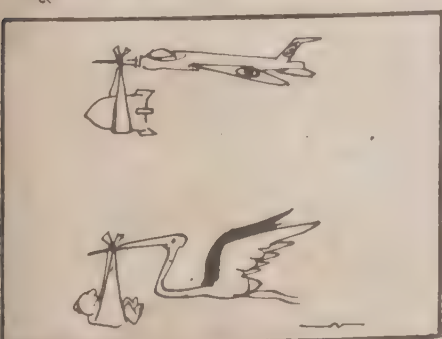
१. मनी चावला—हरिद्वार, २. सुरेश चन्द—वाडापलानी, ३. कुमारी किरन घनश्याम वासने—इन्दौर, ४. सपना शर्मा—कानपुर, ५. शिव कुमार—नारासन साबरमती।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. मीनाक्षी स्वरूप—नई दिल्ली, २. पमिन्दर सिंह—यमुना नगर, ३. मनोज कुमार—नई दिल्ली, ४. दौलत राम खत्री—बीकानेर, ५. सुमित सिंह चावला—बम्बई

कैमल सर्टीफिकेट

१. अर्जुन सिंह—एटा, २० अजय कुमार खत्तर—गाजियाबाद, ३. राजेन्द्र शर्मा—जबलपुर, ४. राहुल—सैमुएल —नई दिल्ली, ५. दर्पण शर्मा—नई दिल्ली, ६. यशवीर सिंह—बरेली, ७. चैनराज जैन—बंगलौर, ८. जितेन्द्र सिंह राय—झांसी, ९. रीना जायसवाल—देवरिया (उ.प्र.), १०. हसन मासूद—इलाहाबाद।



"दीवाना के अंक ३ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

ल[1]	क्ष	म[2]	ण	रे[3]	खा[4]
गा		ह		त[5]	ला
ता[6]	र[7]	क		का	
र[8]	प		उ[9]	म	स[10]
	ट[11]	ल[12]		ह[13]	म
म[14]	न	की	ज	ल	न

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता—कुलवन्त सिंह भाटिया, ७९/४ लेबर कालोनी, गोविन्द नगर, कानपुर ०८००६

हा हा हा

रसिकलाल जी बड़े विनोदी स्वभाव के थे। एक दिन बाज़ार में बरसों से बिछड़ा एक यार मिला! यार ने पूछा, "भाभी कैसी है?"

"वह तो स्वर्ग लोक को चली गयी पिछले साल।" रसिकलाल बोले—

यार ने दुख प्रकट किया, "यार बहुत अफसोस है . . ."

"क्यों? तुम चाहते थे कि वह स्वर्ग न जाये नर्क में जाये?"

यार सकपका गया, "नहीं नहीं, मेरा मतलब था . . . मुझे खुशी है . . .".

"तुम्हें खुशी है कि उसका स्वर्गवास हो गया?"

यार और ज्यादा सकपका, " . . .मेरा मतलब मुझे बड़ी हैरानी है . . .।"

रसिकलाल ने ठहाका लगाया, "हैरानी मुझे भी है! उस जैसी औरत स्वर्ग कैसे जा सकती है?"

दीवाना फ्रेंड्स क्लब



नरेन्द्र भारद्वाज, म.न. ९०७ अर्जुन नगर, गुड़गांव, २१ वर्ष, पत्र मित्रता, संगीत, नाटक लिखना।



राजा धनवानी, विजय निवास कटोरा तालाब रायपुर (म.प्र.), २१ वर्ष, पत्र-मित्रता।



सुरेन्द्र कुमार चौधरी, गांवइटाली, हिमाचल, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कहानी पढ़ना।।



अमर जीत, कालिज रोड, नई बस्ती, खुरजा, २२ वर्ष, कसरत करना, पत्र-मित्रता।



रूपा [illegible] धाप. थान्कोट चेक [illegible]स्ट काठ. नेपाल, १९ वर्ष डाक टिकट संग्रह।



गनेश प्रसाद चक्रवर्ती द्वारा मगन लाल, पश्चिमी कटिणापाथर सिद्ध बाबा रोड जबलपुर, १८ वर्ष।



मुकेश बत्ता "नीलू", महबूब स्टुडियो शेरांवाला गेट, पटियाला, २५ वर्ष, फरमाइश भेजना।



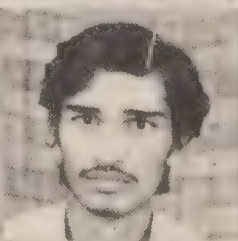
दिनेश नारायण सेठ, सिनेमारोड, मफतपुर गिरिडीह-८१५३०१, २१ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना।



अनिल जैन द्वारा मोती राम अनिल कुमार, मनोहर बाजार हंसी-१२५०३३, २३ वर्ष।



जयन्त नाथ वर्मा, पंजाब 'नेशनल बैंक' बगल, प० चम्पारण, १३ वर्ष, दिवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, पत्रिका पढ़ना।



राजकुमार कन्नौजिया द्वारा श्री लखीराम, हाइडिल कालोनी, १०२ म.न. बारह क्वार्टर, जैल चुंगी।



राजेश कुमार द्वारा बाके बिहारी प्र. क्लेक्टर स्ट्रेनो समस्तीपुर, ११ वर्ष, शतरंज खेलना।



गिरिराज खण्डेलवाल, गिर्राज फ्लोरमिल, हथरोई अजमेर रोड, जयपुर (राज.) २२ वर्ष।



सुदामा प्रसाद मंगलानी, ९६, लालमारी काका नगर जबलपुर (म.प्र.), २० वर्ष।



भुवनपति निराला 'यननाइन', चारी-चौरा, मुन्डेरा बाजार, गोरखपुर २६३२०१ (उ. प्र.)।

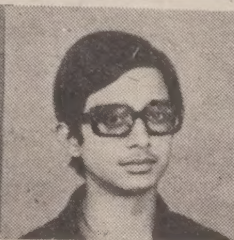


महमूद हुसेन, मकान नं. १०-७१ हुजुराबाद, जिला, करीमनगर (उ. प्र.) २५ वर्ष।

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज़ साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



संजय सूद, ३१, गोलशा रोज लिलूआ बंगाल, १४ फुटबाल खेलना।



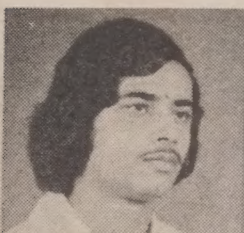
मु. जफरु जमा 'जीवा' द्वारा मु. नूरूद्दिन (दरोगा) स्थान एल. सी. रम।



दीपक कुमार ठाकुर, पो. दुलिया जास जि• डिब्रूगढ़, असम ७८६६०२, १८ वर्ष।



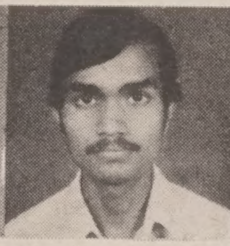
कुमार शालू खुराना, द्वारा श्रीधन-श्याम दास खुराना, सब्जी मंडी जींद (हरि.) २० वर्ष।



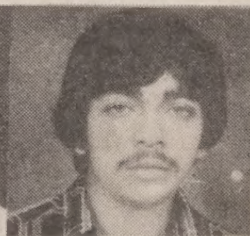
सुरेश कुमार मलग न्यू इणडिया, फन्सी स्टोर बस इटैण्ड, बगागीर १६वर्ष, पत्रमित्रता।



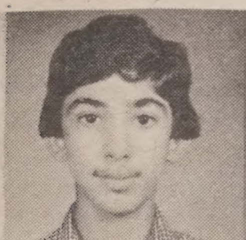
हरीश चन्द्र भट्ट, जी. ५ तुगलक क्रिसेण्ट, नई दिल्ली-११००११, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



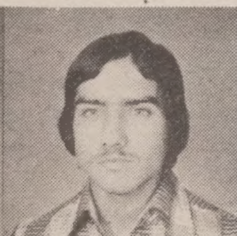
कृष्णा नंद शर्मा, ब्लाक नः ३२/२-२ रोड नं. २ बागबेश, १६ वर्ष, सिनेमा देखना।



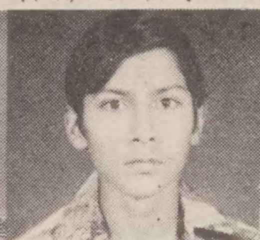
प्रमोद कुमार सिंह गौर, मो. बाकर जई/डा० केरूगेज, १९वर्ष पत्र मित्रता करना।



राजेन्द्र तनेजा, जे. आठ कीर्तीन-गर, नई दिल्ली-१५, १५ वर्ष पत्र मित्रता, चित्रकारी करना।



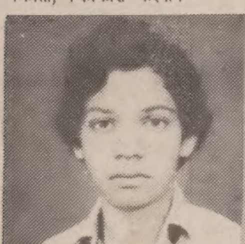
हरबन्स धीमान, टी-आर धीमान निवास नगरोटा सूरियां, नहः देहरा. जि. कांगड़ा, (हि.प्र.) १७६०२७



राज कुमार जैन, नव-परिधान, जैन मंदिर डाल्टनगंज (बिहार) १७ वर्ष, बच्चों को प्यार करना।



राकेश महाजन बी.ए./१४४ वी जनकपुरी, २० वर्ष, फिल्में देखना और किताबें पढ़ना।



सुनील चक, ७ सरदार पटेल मार्ग सिविल लाइन्स, इलाहाबाद, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता फिल्में देखना।



राजीव गोयल हैन्डलूम हाऊस मौ. वल्लभ मन्डी चौक मुरादाबाद पिन कोड नं. २४४००१।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ साफ लिखें।

नाम ....

....

पता ....

....

आयु ....शौक ....

तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु 'गुप्ता'

पृष्ठ २५ से आगे

के उत्तर में स्थित। पहले सन डायल कैनीयन के नाम से जानी जाती थी, क्योंकि एक विशेष कोण से इस की एक चोटी सन डायल (धूप घड़ी) के शंकु के समान दिखाई देती है। शंकु वहीं होता है जिसकी छाया धूपघड़ी के डायल पर पड़ती है, श्याम। इसी से इस पहाड़ी का नाम सन डायल कैनियन पड़ा था, जिसे बातचीत की भाषा में छोटा कर डायल कैनियन कर दिया गया।'

"धन्यवाद, डैडी" श्याम बोला।

उसने कुछ और विवरण लिखा, फिर वह सोचने लगा क्या राजू को डायल कैनियन सम्बन्धी जानकारी अभी देनी चाहिये, फिर उसे ये कुछ इतनी महत्वपूर्ण नहीं लगी, फिर भी पता नहीं, राजू किसे महत्वपूर्ण समझे। और ये सोच कर उसने माथुर के घर फोन करने का फैसला कर लिया। राजू के फोन सुनने पर श्याम ने सन डायल कैनियन सम्बन्धी जानकारी दी, एक क्षण तो चुप्पी रही फिर उसे राजू के कुछ निगलने का सा स्वर सुनाई दिया।

'श्याम, पहले जासूस ने उत्सुकता दबाते हुए कहा "ये ही है, ये ही संकेत है।"

"क्या संकेत है?" श्याम ने राजू की बात समझने का प्रयत्न करते हुए पूछा?"

"वह संकेत, जिसे मैं ढूंढ़ रहा था, कल तो तुम्हें लायब्रेरी में काम करना है, है ना? अच्छा, वहाँ से खाने के बाद सीधे यहाँ आ जाना, एक बजे दोपहर तक। मैं सब कुछ तैयार रखूँगा।"

"किस चीज़ के लिये तैंयारी?" श्याम ने पूछा, परन्तु राजू फोन बन्द कर चुका था। श्याम अपने काम में भौहें चढ़ता वापिस आ गया। यदि जो जानकारी उसने दी है, वह कोई संकेत है, तो भी उसे कुछ समझ नहीं आ रहा।

वह उलझन में पड़ा सोने गया, अगली सुबह लाइब्रेरी में भी वह खोया-खोया सा ही काम करता रहा। पूरे समय ये ही समझने का प्रयास कर रहा था कि राजू के दिमाग में

गिरिराज
फ्लोरमिल, हथरोई अजमेर
जयपुर (राज.) २२

उसे पता नहीं चला, जब तक वह माथुर कबाड़ी घर दोपहर को नहीं पहुँचा। वहाँ उसने राजू, महिन्दर और गस को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। छोटा ट्रक जाने के लिये तैयार खड़ा था और हँस और कुणाल दोनों ही उसमें अगली सीट पर बैठे थे। पीछे दो एक फावड़े थे तथा कुछ पुरानी तिरपाल लड़कों के बैठने के लिये बिछी थी। राजू ने अपना कैमरा ल रखा था।

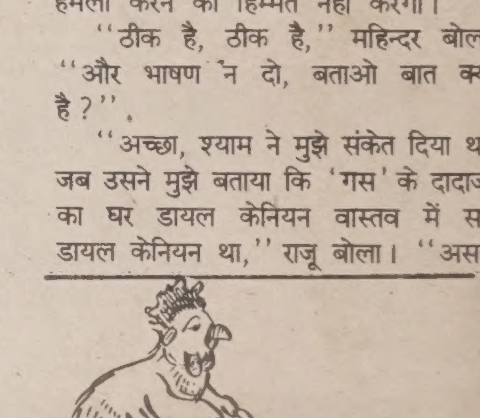
"पर हम जा कहाँ रहे हैं?" श्याम ने पूछा, जैसे ही पुराना ट्रक खड़खड़ करता कबाड़ी घर से बाहर निकला।

"वही तो मैं भी जानना चाहता हूँ" महिन्दर ने साथ दिया, "तुम बड़े रहस्यमय हो, राजू। मेरे विचार से तुम्हें हम सब को अपने प्लेन में सम्मिलित कर लेना चाहिये। आखिर हम तुम्हारे साथी हैं"।

"हम मि० हिराशियो अगस्त के संदेश की परीक्षा लेने जा रहे हैं," अपने से खुश होते हुए राजू बोला। "हँस और कुणाल को सुरक्षा के लिये साथ ले लिया है, मेरे ख्याल से इन दोनों के साथ रहते, कोई हम पर हमला करने की हिम्मत नहीं करेगा।"

"ठीक है, ठीक है," महिन्दर बोला, "और भाषण न दो, बताओ बात क्या है?"

"अच्छा, श्याम ने मुझे संकेत दिया था, जब उसने मुझे बताया कि 'गस' के दादाजी का घर डायल केनियन वास्तव में सन डायल केनियन था," राजू बोला। "असल



में ये तो मुझे स्वयं ही सोचना चाहिये था, जब मैंने रसोईघर की कुर्सी पर बंधे बैठे हुए, खिड़की से बाहर पहाड़ी की छाया को बाग में धूप घड़ी की सुई के समान खिसकते देखा था।

क्रमशः


रीना राय
दीवाना

लम्बे संघर्ष और सफलता की कहानी

रीना राय

रीना राय आज फिल्म जगत की न केवल चर्चित अभिनेत्री है अपितु सफल नायिका भी है। एक लम्बे संघर्ष के बाद रीना ने सफलता प्राप्त कर ली है। नम्बर वन अभिनेत्री हेमा मालिनी के बाद रेखा और रीना राय के ही नाम जुबान पर आते हैं। और अब बाजी रीना राय के पक्ष में नज़र आती है। क्योंकि रेखा से निर्माता-निर्देशक कुछ नाराज़ परेशान नज़र आते हैं। इसकी कुछ जीती जागती मिसालें सामने हैं।

निर्माता-निर्देशक जे. ओम प्रकाश ने अपनी फिल्म 'आक्रमण' में पहले रेखा को ही लिया था। लेकिन बाद में अपनी तीनों फिल्मों में इन्होंने रेखा के बजाय रीना राय को चुना। अपनापन, आशा और अर्पण। तीन में से दो फिल्मों में रीना राय के अभिनय की खूब प्रशंसा हो चुकी है।

सुल्तान अहमद ने भी फिल्म 'गंगा की सौगंध' में पहले रेखा को ही लिया लेकिन बाद में सुल्तान अहमद ने रेखा को ना लेने की सौगन्ध खा ली। उन्होंने 'धर्मकांटा' और 'तू भी सच्चा मै भी सच्चा' में रीना राय का लिया।

प्रकाश मेहरा ने 'मुकद्दर का सिकन्दर' में रेखा को लिया। लेकिन बाद में 'ज्वालामुखी' में उन्होंने भी रीना राय को लिया।

निर्देशक नरेन्द्र बेदी ने फिल्म 'इंसान' में पहले रेखा को लिया। कुछ ही दिन की शूटिंग के बाद इन्होंने भी रेखा को छोड़ दिया और रीना राय को चुना।

इन सब बातों से यही जाहिर होता है कि रीना राय की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है वह तीन-तीन शिफ्टों में भी काम कर अपनी फिल्में नहीं निबटा पा रही हैं। रीना राय स्वयं अपनी फिल्म भी बना रही है 'सनम तेरी कसम'। इस फिल्म में रीना के नायक हैं कमला हसन जो दक्षिण के जाने माने कलाकार हैं।

रीना राय अपने भाई को भी इसी लाइन में लाने की योजना बना रही हैं। इनकी सफलता का राज है इनका स्वभाव। कभी किसी से इनका झगड़ा नहीं होता। सैट पर हमेशा समय से जाती हैं। देवआनन्द और टीना मुनीम में अनबन होने के बाद देवआनन्द ने भी रीना को ही अपनी आगामी फिल्म 'स्वामी दादा' के लिये चुना है। रीना की बरसों से इच्छा थी कि वह देव आनन्द के साथ काम करे।

शत्रुघ्न सिन्हा से अलगाव के बाद भी रीना ने उसके खिलाफ जुबान नहीं खोली, यह इनकी शराफत का सबूत रहा है। इनकी बहन बरखा भी रीना की सहयोगी रही है, एक अच्छी सलाहकार है यह।

अभिनय क्षमता में दत्त रीना राय में वह सभी विशेषतायें है जो एक ग्लैमरस हीरोइन में होनी चाहिये। रीना राय किसी भी हीरोइन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं मानती। उनका कहना है कि जो भूमिका उसे मिलनी है वही मिलेगी।

रीना राय के बारे में निर्देशकों और निर्माताओं के विचार अच्छे व दोस्ताना हैं। रीना राय ही एक मात्र ऐसी अभिनेत्री है जिन्होंने 'ज़रूरत गर्ल' का लेबल उतार फेंका और एक गम्भीर नायिका बन कर दिखाया। वरना इन के साथ की आशा सचदेव, रेहाना सुल्तान, राधा सलूजा गुमनामी के अंधेरों में खाती जा रही हैं।

रीना राय की एक इच्छा है कि वह फिल्म 'खूबसूरत' जैसी नायिका की भूमिका निभायें जिसमें रेखा बेमिसाल रही है।